चन्दामामा

जून १९७४

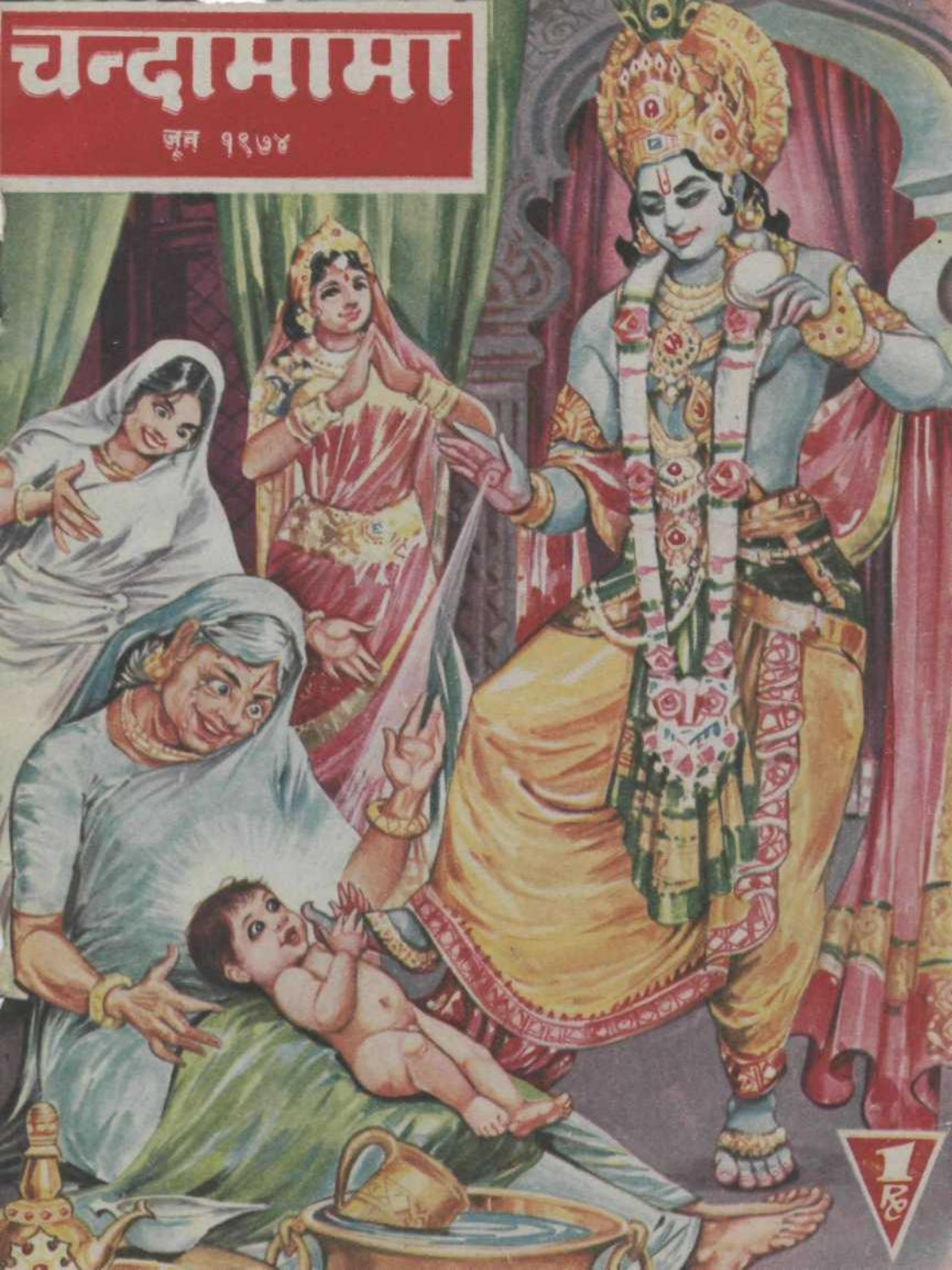

Photo by: **MADAN GOPAL**

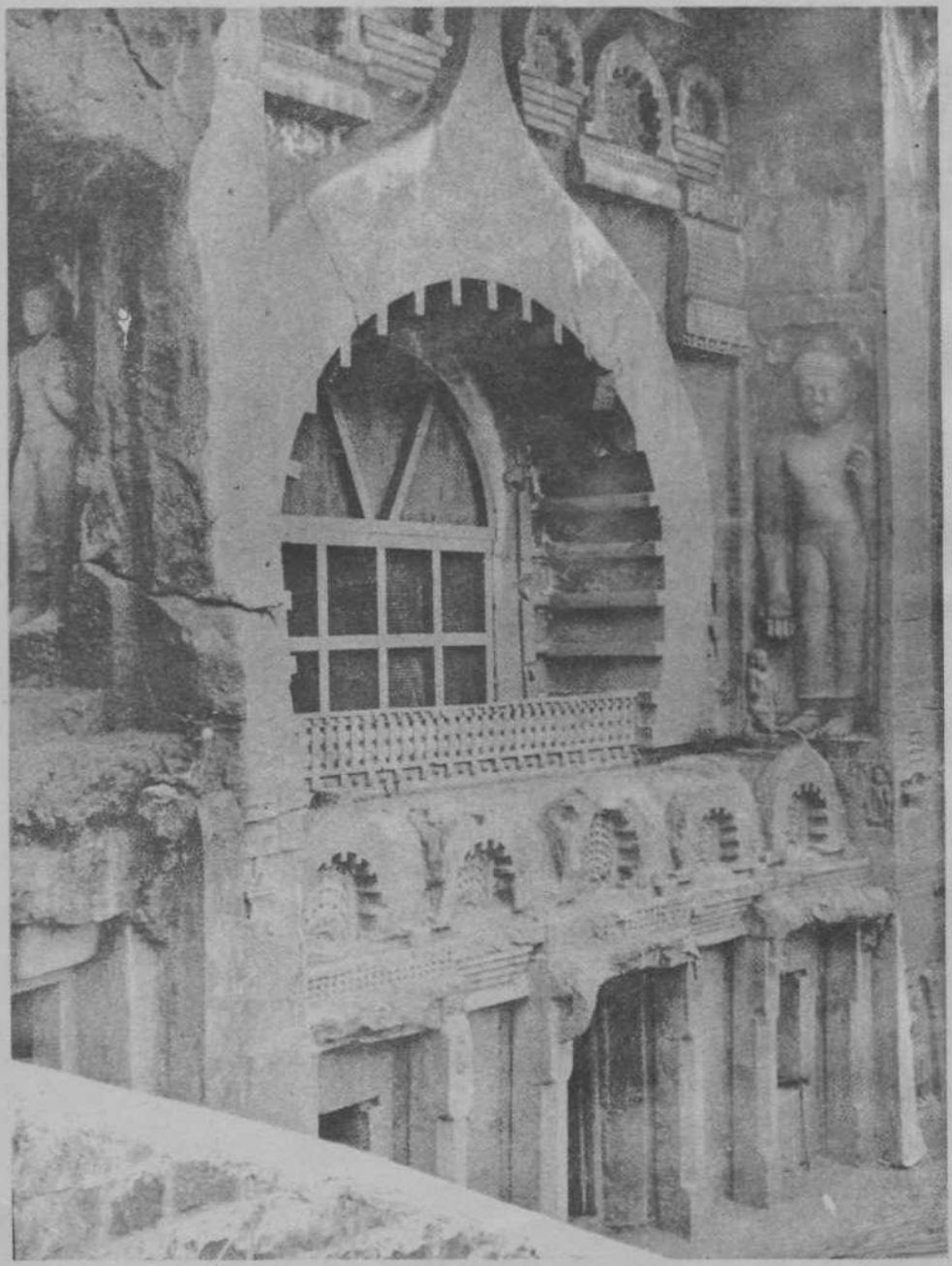

ANCIENT SCULPTURE

राम और श्याम के साहसिक कारनामे
जादूगरनी के जाल में!
जंगल में हुई रात भयानक,
झोपड़ी उनको दिखी अचानक.
वहाँ न था इन्सानों का घरबार, मेंढकों, खरगोशों की थी भरमार.
ओ रे ओ... वे बोले तब, देखा जानवरों को बोलते जब.
"बचाओ, बचाओ हमारी जान, हम हैं तुम्हारे जैसे इन्सान."
इतने में भयानक जादूगरनी आई, लाल आँखें दिखाकर जो चिल्लाई
"अब तुम मेरे पंजे में हो, बना दूँगी मैं मेंढक तुमको."
तरकीब लड़ाई राम-श्याम ने, पॉपिन्स उछाले जादूगरनी के सामने.
जादूगरनी खुशी से मुस्कराई, और सबने आजादी पाई.

रसीली
प्यारी
मज़ेदार
पारले पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
everest/800/PP-HN

सिर्फ़ रुबी डस्ट चाय में ही आप पाते हैं तीनों खूबियाँ

१. चटपट लिकर **२.** मज़ेदार खुशबू **३.** हर पैकेट से और ज़्यादा कप चाय

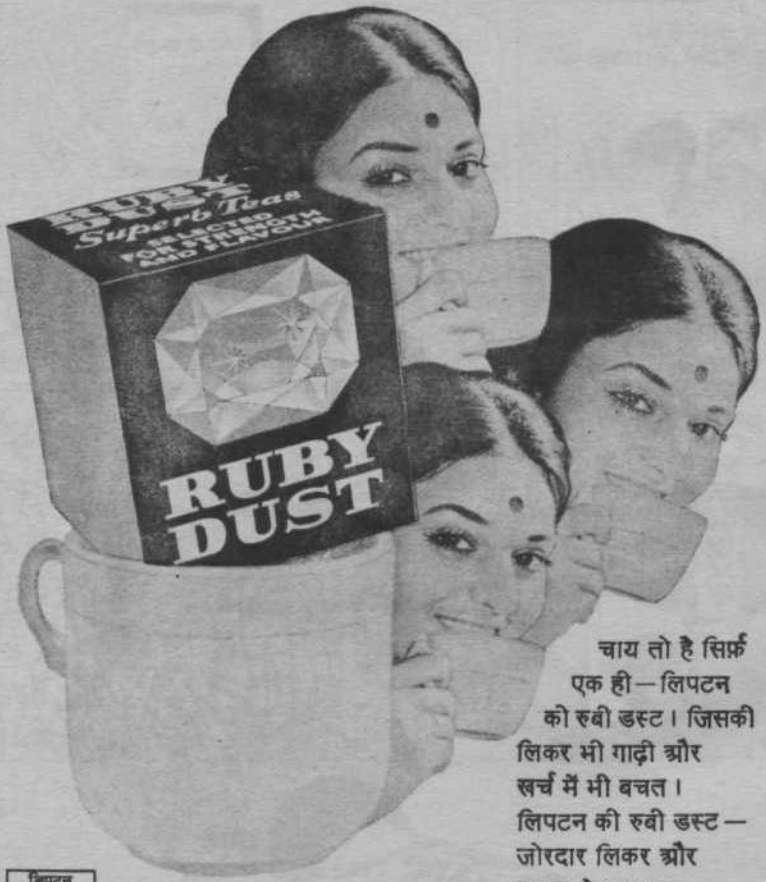

चाय तो है सिर्फ़ एक ही — लिपटन को रुबी डस्ट। जिसकी लिकर भी गाढ़ी और खर्च में भी बचत। लिपटन की रुबी डस्ट — जोरदार लिकर और खुशबू से भरपूर।

लिपटन वाली अच्छी चाय

LIPTON

सिर्फ़ पैकेट की चाय ही रहती है ताज़ेताज़ा और खुशबू से भरपूर

लिपटन की रुबी डस्ट हर पैकेट से पायेंगे मज़ेदार और ज़्यादा कप चाय

LRDC-10 HIN

VITREOUS® सैनेटरीवेयर ® वॉल टाइल्स

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बने हुए

हिन्दुस्तान सैनेटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड

सोमानी-पिलकिंगटन्स लिमिटेड

२ बेलेसली प्लेस, कलकत्ता-७०० ००१

बच्चों के लिये...
भारत की
सर्व प्रथम एवं
सर्वाधिक लोकप्रिय .....

ज्ञान भारती
बाल पॉकेट बुक्स

भरपूर मनोरंजन ● अनोखी कहानियाँ ● आकर्षक साज-सज्जा

अपने नगर के पुस्तक विक्रेता से या अखबार वाले से मांगिए या सदस्य बनकर घर बैठे प्राप्त करें। ✳ **प्रत्येक पुस्तक १·१०**

चौबीसवें सेट की पुस्तकें

- एक लड़की जो प्रधानमंत्री बनी
- कहो न मम्मी
- कुदाल पंडित
- बुरे लोग
- हा...हा...हू...हू...

● हास्य लघु कथाएँ

● गोपाल भांड के लतीफे ● दिल्ली में कौवे ● बात में बात ● किस्सा मियाँ मटरू का ● मुल्ला नासिरुद्दीन के लतीफे

● रोचक कथाएँ

● चांद जादो ● और फिर ● मनचाही नहि होत है ● धत्तेरे की ● खूंखार बकरे ● अक्ल बड़ी या भैंस ● पंडित जी का सपना ● उस्तादों के उस्ताद ● धूर्त मंत्री

● प्रेरक कथाएँ

● कहानी चार खरगोशों की ● बदला ● हाथी का गुरु तीतर ● हातिमताई का घोड़ा ● कमांडर की बेटी ● गूंगा राजकुमार

● रोचक बाल उपन्यास

● पाताल लोक की यात्रा ● कुर्सी का रहस्य ● बर्फ की देवी ● निरुप्रम देश का रहस्य ● सोने की ताबीज ● काले पहाड़ की जादूगरनी ● परियों का शहजादा ● गंधराज ● सुनहरा बाल ● अंतरिक्ष में हंगामा ● फूल कुमारी ● समुद्री खजाना ● आँख की चोरी ● समुद्र का शैतान ● भयानक योगी ● अब्दुल्ला की नौकरी ● बुरे फंसे अच्छे बचे ● मुर्गे ने जब ब्याह रचाया ● झूठों का बादशाह

● प्रेरक बाल उपन्यास

● जीवन मौत का खेल ● सुनहरे दिन भारत के ● मौत के चंगुल में ● सिंह सपूत अमर शहीद भगत सिंह ● विश्व विजेता अलक्षेन्द्र ● एक थी लड़की ● तू जीता मैं हारा ● कमल और कमाल ● सुनो कहानी साहस की ● शाबास सरोवर ● एक नन्हा शहीद खुदी राम बोस

ज्ञानभारती का विज्ञान अंक **मुफ़्त** मंगाने के लिए केवल पत्र लिखें

✳

advend

ज्ञानभारती बाल पाकेट बुक्स (च) विशेश्वरनाथ रोड, लखनऊ

पालन-पोषण सही कीजिए; बच्चों को बोर्नविटा दीजिए!

पढ़ने लिखने में सर्वश्रेष्ठ... खेलकूद में आगे

पढ़ने और खेलने में बच्चों की खर्च हुई शक्ति की सही पूर्ति न हो तो इनका मानसिक और शारीरिक विकास अधूरा रह जाता है। रोज़ बोर्नविटा पीने से बच्चों की शक्ति बनी रहती है। पौष्टिक **कोको**, दूध, मॉल्ट और शक्कर के मिश्रण से बना हुआ बोर्नविटा बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

पौष्टिक बोर्नविटा में कोको है जो स्वास्थ्यप्रद है और स्वादिष्ट भी!

शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए–*कैडबरिज* **बोर्नविटा!**

OBM-0449-HIN.

हमें तो
प्यारा लगता है

चन्दामामा

आपको भी प्यारा लगेगा

चन्दामामा के हरेक पुरुष, हरेक स्त्री और हरेक बच्चा पढ़ता है। अंग्रेज़ी, हिन्दी, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, तमिल, गुजराती मलयालम, बंगला और उड़िया इन दस भाषाओं में प्रकाशित बच्चों के इस मासिक पत्र में अत्यन्त रोचक और आश्चर्य भरी कहानियां रहती हैं जो हर दिल में एक उत्साह, एक उमंग भर देती हैं।

चन्दामामा बालकों का अपना मासिक पत्र जिससे बड़े बनते नौजवान और नौजवान बनते बड़ो जैसे बुद्धिमान

वार्षिक शुल्क के लिए सम्पर्क करें : डौल्टन एजेंसीज़, चन्दामामा बिल्डिंग मद्रास- ६०००२६

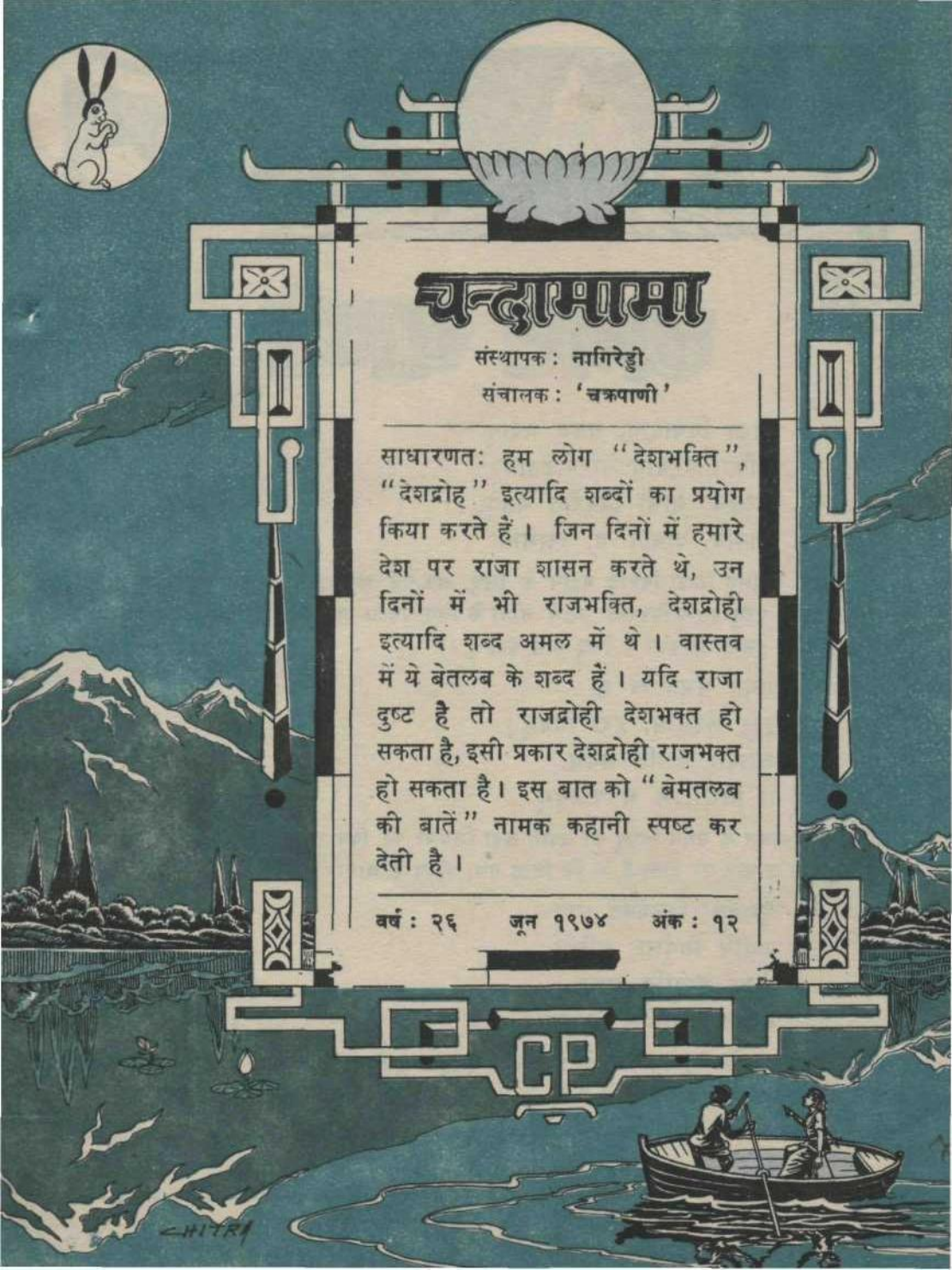

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

साधारणतः हम लोग "देशभक्ति", "देशद्रोह" इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया करते हैं। जिन दिनों में हमारे देश पर राजा शासन करते थे, उन दिनों में भी राजभक्ति, देशद्रोही इत्यादि शब्द अमल में थे। वास्तव में ये बेतलब के शब्द हैं। यदि राजा दुष्ट है तो राजद्रोही देशभक्त हो सकता है, इसी प्रकार देशद्रोही राजभक्त हो सकता है। इस बात को "बेमतलब की बातें" नामक कहानी स्पष्ट कर देती है।

वर्ष : २६ जून १९७४ अंक : १२

अमर वाणी

विद्या विवादाय, धनम् मदाय
शक्तिः परेषाम् परिपीड़नाय
खलस्यः साधो विपरीत मेतत्,
ज्ञानाय, दानाय च, रक्षणाय ॥ १ ॥

[दुष्टों के लिए शिक्षा विवाद बढ़ाने के लिए, धन गर्व करने तथा शक्ति दूसरों को सताने के काम देती है, परंतु इसके विपरीत उत्तम लोगों के लिए शिक्षा ज्ञानवर्द्धन के लिए, धन विनय के लिए तथा शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए काम देती है ।]

समुद्र मंथने ले भे
हरि लंक्ष्मीम्, हरो विषम्;
भाग्यम् फलति सर्वत्र,
न विद्या, न च पौरुषम् ॥ २ ॥

[समुद्र-मंथन के समय विष्णु को लक्ष्मी तथा शिवजी को विष प्राप्त हुए । इसलिए परिणाम अपने भाग्य के आधार पर होता है, न कि विद्या तथा पौरुष के आधार पर ।]

गुणवंतः क्लिश्यंते प्रायेण,
भवंति निर्गुणाः सुखिनः;
बंधन मायांति शुकाः
यथेष्ट संचारिणः काकाः ॥ ३ ॥

[गुणवान व्यक्ति अक्सर कष्ट झेलते हैं और गुणहीन सुखी होते हैं । तोते बंधनों में फँस जाते हैं और कौए स्वेच्छा के साथ विचरते हैं ।]

यक्ष पर्वत

[२४]

[खड्गुवर्मा तथा जीवदत्त ने वीरपुर के मंत्री को यह आश्वासन दिया कि वे वीरपुर की राजपुत्री वसंतकुमारी को यक्ष के हाथों से मुक्त करके ला देंगे, तब मणिभूषण के द्वारा लाई गई नाव पर चल पड़े। सूर्यास्त के समय तक वे लोग नदी के किनारे स्थित एक पहाड़ी के पास पहुँचे। मणिभूषण नाव को किनारे की ओर ले चला। बाद.....]

नाव के किनारे लगते ही खड्गवर्मा और जीवदत्त ज़मीन पर कूद पड़े। जीवदत्त ने मणिभूषण से कहा–"तुम नाव को किनारे पर स्थित किसी शिला के साथ बाँध दो। नाव में जो कंद और फल हैं, उन्हें तुम खा लो। तब तक मैं इस घने जंगल में किसी हिरण या जंगली सुअर का शिकार करके ले आता हूँ। फिर हम लोग भी खाना खायेंगे।"

यक्ष मणिभूषण ने भय का अभिनय करते कहा–"जीवदत्त, उन पहाड़ों में मत जाओ। इस प्रदेश में भयंकर राक्षस निवास करते हैं। उनके द्वारा जान खतरे में पड़ जाने की संभावना है।"

"राक्षसों से भी अति भयंकर तथा मंत्र-तंत्र जानने वाले तुम्हारे यक्षों के बीच जाने वाला मैं भला इन राक्षसों से क्यों डरूँगा?" यों कहते जीवदत्त खड्गवर्मा के

निकट गया और बोला–"खड्गवर्मा, मैं एक घड़ी के अंदर शिकार करके लौट आऊँगा। तुम लकड़ियाँ बीनकर आग जला दो।"

जीवदत्त ठीक एक घड़ी के अंदर एक हिरण का शिकार करके अपने कंधे पर डाल नाव के पास लौट आया। इस बीच खड्गवर्मा ने सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा करके आग तैयार की।

कुछ ही मिनटों में खड्गवर्मा और जीवदत्त हिरण को काट कर उसके माँस को अंगारों पर जलाने लगे। माँस के जलने की गंध चारों तरफ़ फैल गई।

उस वक़्त भयंकर आकृतिवाली राक्षसी पेड़ों की ओट में से हाथ फैला कर आगे बढ़ते चिल्ला उठी–"मानव की गंध आ रही है! मानव की गंध! अरे, यहाँ पर कौन है?"

राक्षसी को देखते ही खड्गवर्मा सतर्क हो उठ खड़ा हुआ, तलवार खींचकर उसकी ओर बढ़ने लगा। पर जीवदत्त ने उसको रोक कर राक्षसी से कहा–"क्या तुम राक्षसी हो या राक्षसी का रूप धारण किया यक्ष हो? यहाँ पर मानव की गंध के साथ पका हुआ हिरण के माँस की भी गंध आ रही है। क्या इसकी गंध तुम्हारे नासिकापुटों को नहीं लग रही है?"

ये बातें सुन राक्षसी अचरज में आ गयी और गरज कर बोली–"तुम कौन हो? मानव होकर मुझे देखते ही डर के मारे कलेजा फटकर तुम नहीं मरे; उल्टे मुझसे ही सवाल करते हो?"

राक्षसी के मुँह से इन बातों के निकलने की देरी थी कि खड्गवर्मा ने एक ही छलांग में उछलकर उसके केश पकड़े और उसकी छाती में छुरी भोंकने को हुआ, तब जीवदत्त ने उसका हाथ पकड़ कर रोका और अपने मंत्र-दण्ड को राक्षसी के सिर पर टिका कर कहा–"राक्षसी, अब बताओ, क्या हम साधारण मानव हैं या...!"

राक्षसी आपादमस्तक काँपते हुए बोली–"तुम लोग आदमी नहीं, यक्ष होंगे। मुझे छोड़ दो। मेरे दोनों पुत्रों को इसके

पहले ही तुम लोग बन्दी बनाकर यक्षपर्वत में ले गये हो। मेरी उम्र ढल गई है। उस पहाड़ के गर्भ में स्थित शिलाओं को तोड़कर मैं तुम लोगों के वास्ते सोना और हीरे निकाल नहीं सकती।"

यह उत्तर सुनकर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त विस्मय में आ गये।

जीवदत्त ने खड्गवर्मा को तलवार म्यान में रखने का आदेश दिया और कहा–"राक्षसी, तुम्हारा वध करना हमारा उद्देश्य नहीं है। तुम कहती हो कि यक्ष तुम्हारे पुत्रों को पकड़ ले गये हैं, यह बात अगर सच हो तो उन्हें भी बचाकर हमारे साथ ले आयेंगे। लो, देखो; वहाँ पर बैठा हुआ व्यक्ति यक्ष है। इसलिए तुम उन लोगों से संबंधित रहस्य यहाँ पर मत बताओ, तुम्हारा निवास कहाँ है? वहीं पर चलेंगे, चलो। वहीं पर हम को सारी बातें सुना सकती हो!"

इस बार राक्षसी ने यक्ष मणिभूषण की ओर सहमी दृष्टि से देख कहा–"अजी मानव, कृपया मुझे उस यक्ष के हाथों में मत सौंपो! मुझे अपने रास्ते जाने दो। तुम मुझ से जो भी मदद चाहोगे, मैं पहुँचाने को तैयार हूँ। मगर तुम मुझे उस यक्ष के हाथों में मत सौंपो। मुझे बचाओ। मैं तुम्हारे पैरों पर पड़ती हूँ।"

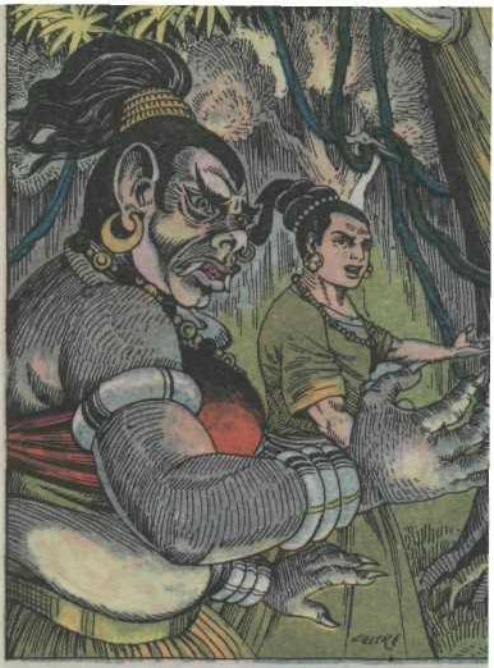

जीवदत्त राक्षसी को अभय प्रदान करते बोला–"मैं और मेरा मित्र, हम दोनों दुष्ट यक्षों का निवास यक्ष पर्वत पर जा रहे हैं। लगता है कि तुम्हें उनके संबंध में थोड़ी-बहुत जानकारी है, चलो तुम्हारी गुफा में, वहीं बताओ।"

यक्ष को देखने के बाद राक्षसी यही सोचने लगी थी कि वहाँ से जितनी जल्दी खिसक जाय तो उतना ही अच्छा है। जीवदत्त ने जब गुफा का नाम लिया, तब उसे प्रणाम करते बोली–"अजी मानव, तुम हमारी गुफा के पास आ जाओ। यहीं पास में ही है। मेरे मर्द भी वहीं पर हैं। वे तुम को यक्ष पर्वत के बारे में

कई भयंकर बातें सुना सकते हैं। मैं उस गुफा के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं रखती।"

जीवदत्त ने राक्षसी के निवेदन को मान लिया, तब वह खड्गवर्मा की ओर मुड़कर बोला–"खड्गवर्मा, मेरे लौटने तक तुम्हारी तलवार में मेरे मंत्रदण्ड की महिमा होगी। मणिभूषण अगर भागने की सोचेगा या तुम्हारी हानि करना चाहेगा तो उसका निर्दयता के साथ वध करो।"

ये बातें सुन मणिभूषण का चेहरा पीला पड़ गया, पर फिर वह हँसने का अभिनय करते बोला–"जीवदत्त, तुम उस दुष्टा की बातों पर यक़ीन मत करो। वह तुम को अपनी गुफा में ले जाकर कच्चा चबा डालेगी।"

जीवदत्त हँसकर बोला–"अगर राक्षसी तथा उसके पति दोनों मुझे भले ही कच्चे चबा डाले, तब भी तुम्हारे मित्र मणिरंजित का वध करने तथा शिला रथ को हिला कर राजकुमारियों को मुक्त करने के लिए खड्गवर्मा बचे हैं, यह बात मत भूल जाओ।"

जीवदत्त के मुँह से ये बातें निकलने पर मणिभूषण का चेहरा क्रोध के मारे लाल हो उठा। मगर वह कुछ कहने से डर गया, उसने अपना सिर झुका लिया। राक्षसी अपनी गुफा का रास्ता दिखाते आगे बढ़ी, जीवदत्त उसके पीछे चलते घनी झाड़ियों में ओझल हो गया।

राक्षसी डरते-डरते जीवदत्त को साथ लेकर चार-पाँच मिनटों में गुफा के पास पहुँची। गुफा के सामने एक भीमकाय राक्षस मशाल जलाये उसकी रोशनी में एक शिला से सटकर बैठा हुआ था। उसने आगे चलनेवाली अपनी औरत तथा उसके पीछे चले आनेवाले जीवदत्त को देखकर राक्षसी से कहा–"आश्चर्य है! यह मानव कौन है जो बड़ी निडरता के साथ तुम्हारे पीछे चला आ रहा है? आज तक तो कभी ऐसा न हुआ था।"

राक्षसी शीघ्र अपने पति के निकट पहुँच कर बोली–"तुम भूख के लोभ में पड़कर इनको खाने की कोशिश मत करो! खबरदार! इस मानव के हाथ में बड़ी महिमा वाला मंत्र दण्ड है! ये और इनके मित्र ने मिलकर एक यक्ष को बन्दी बनाया है। ये लोग मंत्र-तंत्र जानते हैं। इनकी हत्या करने की कोशिश की तो उसका बुरा फल भोगोगे, समझे!"

"क्या कहा! यक्ष को बन्दी बनाया है?" फिर जीवदत्त की ओर मुड़कर आँखें विस्फारित करते राक्षस बोला–"महाशय! क्या मेरी औरत का कहना सच है! यह थोड़ी बावरी है! यह क्या बोल जाती है, उसका मतलब तक नहीं जानती। इसलिए इसकी बातों पर यक़ीन करना मुझे संभव मालूम नहीं होता।"

जीवदत्त ने जवाब के रूप में मुस्कुरा कर कहा–"तुम्हारी औरत की बातों में ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं है, मैंने सुना है कि तुम्हारे दो पुत्रों को यक्षों ने बन्दी बनाकर यक्ष पर्वत में कहीं छिपा रखा है! क्या तुम उस पर्वत के बारे में कोई रहस्य जानते हो?"

राक्षस ने सिर हिलाया, थोड़ी देर सिर झुकाकर ज़मीन की ओर ताकता रहा, तब सिर उठा कर बोला–"महाशय! आप

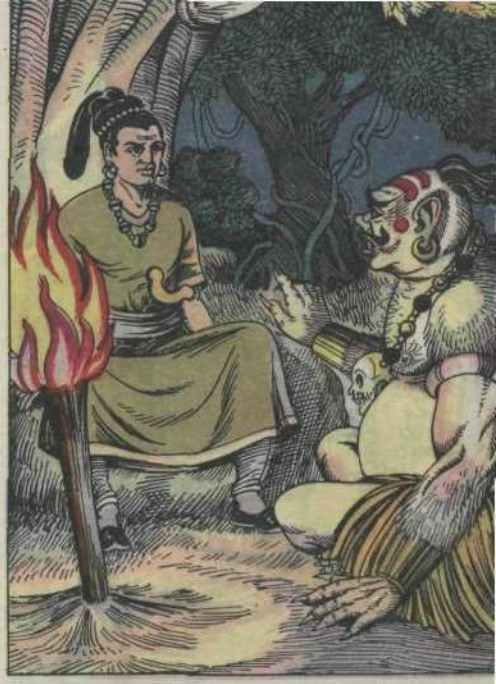

मंत्र-तंत्र जानने वाले मालूम होते हैं! वरना ऐसी हिम्मत के साथ मेरे सामने आकर बात नहीं कर सकते थे। अब रही यह पर्वत की बात! इन विशाल विन्ध्य पर्वतों में से वह एक छोटा पर्वत है! उस प्रदेश का अधिपति मणिरंजित है। यक्ष राजा ने उसको बहुत समय पूर्व उस यक्ष पर्वत का अधिपति नियुक्त किया है। उस दिन से मणिरंजित के अत्याचारों की कोई हद नहीं है। हमारी जाति के लोगों को भी वह खूब सता रहा है! उसका पिंड छुड़ाने का कोई उपाय हो तो बताओ।"

जीवदत्त ने राक्षस की ओर सहानुभूति पूर्वक सिर हिलाया और कहा–"मैं जानता

हूँ कि मणिरंजित बड़ा दुष्ट है! हमारे देश की दो राजकुमारियों को उसने बन्दी बनाकर रखा है। लेकिन मैं तुम लोगों से सिर्फ़ यही जानना चाहता हूँ कि वह तुम जैसे राक्षसों को पकड़ ले जाकर क्या करता है?"

"सुनते हैं कि उस यक्ष पर्वत के भीतर सोना, हीरे व माणिक हैं। उन्हें खोद निकालने के लिए मणिरंजित बन्दियों को अपने गुलाम के रूप में काम में लाता है। यह भी सुना है कि उन गुलामों में राक्षसों के अतिरिक्त कुछ गंधर्व भी हैं। ऐसे लोगों को दिन-रात उस पहाड़ के भीतर अंधेरे में ही अपना वक़्त बिताना पड़ता है। उन लोगों से पहाड़ खुदवा कर वह मालामल बनता जा रहा है, इसके साथ उसके अत्याचार भी बढ़ गये हैं।" राक्षस ने जवाब दिया।

"तब तो उन गुलामों को पहाड़ के भीतर से बाहर आकर भागने से रोकने के लिए मणिरंजित ने कड़ा पहरा भी बिठाया होगा न! अच्छी बात है! क्या वहाँ पर कोई शिलारथ भी है?" जीवदत्त ने पूछा।

"जी हाँ! लोग कहते हैं कि उस रथ को पहाड़ काट कर बनाया गया है। मगर मैंने उसे कभी देखा नहीं है!" राक्षस ने उत्तर दिया।

जीवदत्त को लगा कि अब राक्षस से जानने के लिए कोई बात बची नहीं है। राक्षस ने जो कुछ सुना है, वही बता रहा है। उसने उस पर्वत को कभी देखा नहीं है। इसके बाद जीवदत्त वहाँ से निकलते हुए राक्षसी से बोला–"तुम मानव की गंध चिल्लाते हमारी आँखों में पड़ गई। इससे हमारा लाभ ही हुआ। मेरे साथ चलो, जलाया गया हिरण का माँस लेती जाओ।"

ये बातें सुन राक्षसी खुश हुई। उसने धीमी आवाज़ में राक्षस के कानों में कुछ कहा। तब उसने जीवदत्त से पूछा–"महाशय! मुझे इस बात का विश्वास हुआ

कि आप महान शक्तिशाली हैं। अगर आप उस दुष्ट मणिरंजित को हरा दे तो उसके गुलाम बने हुए मेरे दोनों पुत्रों को छुड़वा लीजिए। मैं ज़िंदगी भर आपके एहसान को नहीं भूलूंगा।"

जीवदत्त रुककर पीछे मुड़कर बोला–"हे राक्षस, मैं तुम्हारा नाम नहीं जानता। मैं उस मणिरंजित के हाथों से तुम्हारे पुत्रों को ही नहीं बल्कि और अनेक लोगों को मुक्त कराने वाला हूँ; तुम चिंता न करो।"

"महाशय! मेरा नाम चण्डमुख है! कृपया हमारी बिनती को भूल न जाइए!" राक्षस ने बिनती की।

थोड़ी देर बाद जीवदत्त के साथ राक्षसी को भी लौटते देख मणिरंजित आपादमस्तक काँप उठा और खड्गवर्मा से बोला–"यह क्या? तुम्हारा मित्र फिर राक्षसी को साथ लेकर आ रहा है!"

"शायद जीवदत्त ने तुम को उस राक्षसी का आहार बनाने का वचन दिया हो, हम उनसे पूछकर जान लेंगे।" खड्गवर्मा ने कहा।

"असली बात मैंने नहीं बताई। यह तो अन्याय होगा! मैंने पहले शायद न बताया हो! मणिरंजित मेरे मित्र नहीं, मेरे मालिक हैं। मैं केवल उनकी आज्ञाओं का

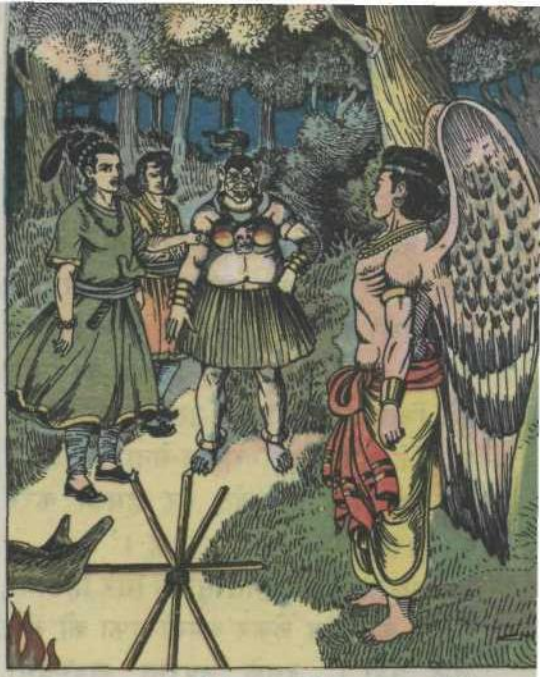

पालन करता हूँ। इससे बढकर मैंने कभी किसी की हानि नहीं की है!" मणिभूषण ने कहा।

ये बातें सुनने पर जीवदत्त ने क्रोध में आकर कहा–"मणिभूषण, तुम अभी से जान के डर से अपना दिमाग खराब मत बनाओ। इस राक्षसी के पति के द्वारा यक्ष पर्वत के सारे रहस्यों को मैंने जान लिया है। हो सकता है कि किसी कारण से मैं और खड्गवर्मा तुम्हारे मालिक मणिरंजित को हरा न पाये। ऐसी हालत में तुम्हारे सभी यक्षों को बन्दी बनाकर सताने के लिए यहाँ से अनति दूर पर रावणासुर जैसे प्रतापी एक राक्षस के

नेतृत्व में बड़ी राक्षस सेना तैयार बैठी है! यह बात तुम अच्छी तरह याद रखो!"

"राक्षस सेना?" मणिभूषण का चेहरा सफ़ेद पड़ गया।

"हाँ, हाँ! कान खोलकर सुनो! राक्षस सेना तैयार है! यह बात अच्छी तरह से याद रखो।" यों कहकर जीवदत्त ने राक्षसी को समझाया–"हिरण का माँस तुम जितना चाहती हो, उतना उठा कर ले जाओ! तुम अपनी राक्षस-सेना के नेता से कह दो कि यक्षपर्वत पर हमला करने का वक़्त अभी आया नहीं है।"

राक्षसी ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया, हिरण का माँस लेकर अपनी गुफा की ओर चल पड़ी। इसके उपरांत खड्गवर्मा, जीवदत्त तथा मणिभूषण खाना खाकर एक पेड़ के नीचे लेट गये। मणिभूषण खड्गवर्मा और जीवदत्त से थोड़ी दूर पर जा लेटा। लेटने के पूर्व उसने नदी के किनारे बंधी नाव की ओर दो-तीन बार देखा। इसे भाँपकर जीवदत्त ने खड्गवर्मा से गुप्त रूप में कहा–"यह कमबख्त यक्ष हम से डरता है। शायद आधी रात के वक़्त यह नाव पर भाग जाय, इसलिए तुम चौकन्ने रहो! घोड़े बेचकर मत सोओ, समझे!"

खड्गवर्मा के मन में भी मणिभूषण के बारे में थोड़ा ऐसा ही संदेह था। इस कारण वह सोने का अभिनय करते यक्ष पर एक आँख लगाये हुए था। आधी रात के वक़्त ज़मीन को सूँघते वहाँ पर एक भालू और एक भेड़िया आ पहुँचे। शायद इन जानवरों ने हिरण की गंध ली होगी। वे दोनों जानवर वहीं पर चक्कर काटते मणिभूषण के निकट जाने को हुए, तब खड्गवर्मा उठ बैठा और उन पर एक छोटा सा पत्थर फेंका, तब भालू और भेड़िया पेड़ों की ओट में भाग खड़े हुए। उस आहट को पाकर मणिभूषण जाग पड़ा, चारों तरफ़ नज़र दौड़ा कर चिल्ला उठा–"खड्वर्मा और जीवदत्त! उठिये! राक्षस हम पर हमला करने जा रहे हैं!"

(अगले अंक में समाप्त)

श्रम का मूल्य

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, तुम आवश्यकता से अधिक श्रम उठाते हो, लेकिन इस दुनिया में श्रम किसी का और उसका फल किसी को प्राप्त होता है। इसके उदाहरण स्वरूप मैं तुम्हें एक छोटी सी कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा : प्राचीन काल में किसी नगर पर एक राजा राज्य करता था। बहुत समय बाद उसके एक पुत्री हुई। इसलिए राजा ने उसे बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा, बड़ा किया। वह अनतिकाल में ही सभी विद्याओं में प्रवीण बन गई और विवाह के योग्य हो गई।

राजा अपनी पुत्री का विवाह करना चाहता था, तभी राजकुमारी एक विचित्र बीमारी का शिकार हो गई। उसने खान-पान छोड़ दिया, पागल की तरह दिन भर बकती और विक्षिप्त रहने लगी। वह दिन ब दिन घुलती गई, इसलिए राजा ने अनेक वैद्यों को बुलवा कर इलाज कराया, पर उसकी बीमारी दूर न हुई। वैद्य भी उसकी बीमारी का पता लगाने में असफल रहें।

आखिर राजा ने निराश हो यह ढिंढोरा पिटवाया कि जो व्यक्ति राजकुमारी की बीमारी को दूर करेगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया जाएगा और अपने अनंतर उसे राजा नियुक्त किया जाएगा। यह समाचार सुनकर अनेक घन वैद्य आगे आये, मगर एक भी राजकुमारी को स्वस्थ न बना पाये।

उन्हीं दिनों में उस नगर में एक सन्यासी आया और गाँव के छोर पर स्थित मंदिर में अपना पड़ाव डाला। वह सन्यासी नगर के लोगों की सब तरह की बीमारियों का इलाज करने लगा। उसका नाम सारे नगर में फैल गया, आखिर यह बात राजा के कानों में भी पड़ी। आशा बड़ी बुरी चीज़ होती है, इसलिए राजा भी अपनी पुत्री को मेना में बिठा कर सपरिवार मंदिर में गया और सन्यासी से मिला।

सन्यासी ने राजकुमारी की जांच करके बताया कि राजकुमारी के तो वैसे कोई बीमारी नहीं है, लेकिन एक ब्रह्म राक्षसी ने उस में प्रवेश किया है। इसीलिए उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया है और वह विक्षिप्त रहती है।

"उस ब्रह्म राक्षसी को भगाने का उपाय क्या है?" राजा ने सन्यासी से पूछा।

"महाराज, कल से आप राजकुमारी के हाथों द्वारा दान करवा दीजिए। सुबह से लेकर शाम तक जो भी ब्राह्मण आयें, उनके मुंह मांगा दिलवा दीजिए। किंतु जिस को दान देने से राजकुमारी इनकार

करेगी, वही ब्रह्म राक्षसी को भगा सकता है।" सन्यासी ने उत्तर दिया।

दूसरे ही दिन से राजा अपनी पुत्री के द्वारा दान करवाने लगा। दूर-दूर से ब्राह्मण आकर दान लेते गये, पर राजकुमारी ने किसी को भी दान देने से इनकार नहीं किया।

इस प्रकार एक वर्ष बीत गया। एक दिन एक ब्राह्मण याचना करते राज महल में आया। दूर पर ही उसे देख राजकुमारी चिल्ला उठी–"उस आदमी को गर्दन पकड़कर निकाल दो!" यों चिल्लाते राजकुमारी महल के भीतर भाग गई।

राजा ने उस ब्राह्मण से पूछा–"पंडितजी, क्या आप मंत्र शास्त्र की जानकारी रखते हैं? मेरी पुत्री को बहुत समय से एक ब्रह्म राक्षसी सता रही है। क्या तुम उसको भगा सकते हो?"

ब्राह्मण ने ब्रह्म राक्षसी को भगाया। राजा ने राजकुमारी के साथ उसका विवाह करना चाहा, लेकिन उसी वक़्त सन्यासी ने प्रवेश करके कहा–"राजन, तुम्हारी पुत्री का मेरे साथ विवाह करो और यह घोषणा कराओ कि तुम्हारे अनंतर मुझे राजगद्दी प्राप्त होगी।"

राजा ने बिना किसी प्रकार के संकोच के अपनी पुत्री का विवाह सन्यासी के साथ किया और राजकुमारी के शरीर से ब्रह्म राक्षसी को भगानेवाले ब्राह्मण को एक लाख स्वर्णमुद्राएँ देकर भिजवा दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा– "राजन, राजा ने ऐसा अन्याय क्यों किया है? उसने जिस प्रकार ढिंढोरा पिटवाया था, उस शर्त के मुताबिक़ ब्राह्मण के साथ राजकुमारी का विवाह न करके सन्यासी के साथ क्यों किया? क्या यह सोच कर राजा डर गया कि सन्यासी उसे शाप देगा? या याचक को अपना दामाद बनाने की अपेक्षा सन्यासी को अपना दामाद बनाना ज़्यादा उचित माना? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकडे-टुकडे हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–"राजा ने जिस वक़्त ढिंढोरा पिटवाया था, तब तक कोई यह नहीं जानता था कि राजकुमारी ब्रह्मराक्षसी के द्वारा पीड़ित है। फिर भी राजा अपनी पुत्री का विवाह ब्राह्मण के साथ कर देता, लेकिन सन्यासी ने आकर राजा के समक्ष यह कहा कि राजा के द्वारा घोषित सम्मान उसे प्राप्त होना चाहिए, तब राजा ने उसकी अर्हता को समझ लिया। वास्तव में राजकुमारी का जिसने इलाज किया, वह राजकुमारी के साथ विवाह करने की इच्छा से न आया था, बल्कि वह केवल याचना करने आया था। राजकुमारी ने अगर ब्राह्मण की माँगी हुई चीज़ दे दी होती तो वह अपने रास्ते चला गया होता। मगर सन्यासी की बात ऐसी नहीं थी। उसने न केवल राजकुमारी में ब्रह्मराक्षसी के प्रवेश की बात बताई, बल्कि यह भी बताया कि कौन व्यक्ति उसे ब्रह्मराक्षसी से मुक्त कर सकता है! अलावा इसके राजकुमारी के स्वस्थ हो जाने के बाद भी उसके साथ विवाह करने को वह साल भर इन्तज़ार करता रहा। राजकुमारी के साधारण स्थिति पर पहुँचने का असली कारण सन्यासी ही है। मंत्रवेत्ता ब्राह्मण केवल निमित्त मात्र है।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

उल्टा कानून

उदयनगर का राजा हिंसा करनेवालों को कठिन दण्ड दिया करता था। मगर वह शिकार खेलने का बड़ा ही शौकीन था। शिकार खेलना अपने क़ानून के विरुद्ध था, इसलिए वह वेष बदलकर रात के वक़्त जंगलों में शिकार खेला करता था।

एक दिन जंगल का एक भील युवक नगर में हिरण का माँस बेच रहा था। राजभटों ने उसे बन्दी बनाकर राजा के सामने हाज़िर किया। राजा ने उसे सौ कोड़े लगाने की सज़ा सुनाई। कोड़े की मार खाकर भील का शरीर छिल गया था, इसलिए उस रात को दर्द की वजह से उसे नींद न आई।

उस दिन रात को राजा जंगल में शिकार खेलने गया, पर उसे कोई जानवर हाथ न लगा। वह निराश हो लौट रहा था, तब उसे भील बस्ती के पास भीलों के खरगोश दिखाई दिये। राजा ने उनमें से एक को चुराना चाहा, भील युवक नींद न आने से जाग रहा था, उसने चिल्लाकर भीलों को बुलाया। भीलों ने वेष बदले हुए राजा को पकड़कर पेड़ से बाँध दिया।

सवेरे राजमहल में राजा को न पाकर राजधानी में हचचल मच गई। यह बात जब भीलों को मालूम हुई तब वे लोग राजधानी में जाकर मंत्री को बुला लाये और पेड़ से बन्धे राजा को दिखाया। इसके बाद राजा ने वह क़ानून रद्द किया।

बेमतलब की बातें

कपूर देश का राजा इन्द्रसेन अपनी प्रजा को अपनी संतान से बढ़कर मानता था। मगर उसमें एक बड़ी कमी भी थी। राज्य का विस्तार करने की उसकी तीव्र आकांक्षा थी। इसलिए अकसर वह युद्ध किया करता था। युद्ध में उसकी कभी हार न होती थी, इस कारण कभी जनता राजा के विरुद्ध विद्रोह मचाती न थी।

परंतु राजा इन्द्रसेन का यह व्यवहार मंत्री सुदर्शन को कदापि पसंद न था। युद्धों के द्वारा जो अपार धन और सैनिकों का क्षय होता था, उसे देख मंत्री को बड़ा दुख होता था। लेकिन सारी दुनिया को जीतने की महत्वाकांक्षा रखने वाले इन्द्रसेन को युद्ध बंद करने की सलाह देना दुस्साहस ही माना जा सकता था। पर बात यह थी कि राज्य बढ़ाने की बुरी लत न हो तो इंद्रसेन से बढ़कर कोई उत्तम व्यक्ति ढूंढे भी मिल न सकता था। उसकी इस बुरी लत को दूर करने के मौक़े के इंतज़ार में मंत्री सुदर्शन था।

इन्द्रसेन ने नये रूप से लाक्षणिक देश को जीत लिया था। उस देश का राजा सुलक्षण युद्ध में हारकर भाग गया और सौगंधिक देश के राजा भीमसेन की शरण में गया। सौगंधिक देश अत्यंत विशाल, संगन्न और सैनिक दृष्टि से शक्तिशाली था। मगर उस देश का शासक भीमसेन शांति का समर्थक था। वह किसी भी देश के साथ युद्ध करने नहीं जाता था। साथ ही कोई भी पड़ोसी राजा उसके देश पर हमला करने की हिम्मत नहीं करता था।

भीमसेन को पराजित करने की इच्छा इन्द्रसेन में प्रबल थी। अब भीमसेन ने सुलक्षण को शरण दी, इस कारण उस पर हमला करने का मौक़ा इन्द्रसेन को

रेखा जैन

प्राप्त हुआ। इन्द्रसेन ने भीमसेन के पास खबर भेजी कि वह सुलक्षण को उसके हाथ सौंप दे। पर भीमसेन ने इनकार किया। इस बहाने इन्द्रसेन ने भीमसेन के साथ युद्ध करने की तैयारियाँ शुरू कर दीं। इस प्रयत्न में उसने लाक्षणिक देश में पड़ाव डाला, सेना का संग्रह करते अपने गुप्तचरों को सौगंधिक देश में भेजा। इस प्रकार जो गुप्तचर सौगंधिक देश में गये, उनका नेता चारुदत्त था।

इस बीच उधर भीमसेन चुप न रहा। भीमसेन इन्द्रसेन की राज्यकांक्षा से भली भाँति परिचित था। वह यह भी जानता था कि इन्द्रसेन अनेक दिनों से लाक्षणिक देश में रह रहा है। इसलिए उसने अपने अनेक गुप्तचरों को रुद्र नामक एक समर्थ व्यक्ति के नेतृत्व में लाक्षणिक देश में भेजकर इन्द्रसेन की चालों को जानने का प्रयत्न किया।

रुद्र गुप्तचर विद्या में प्रवीण था। लाक्षणिक देश में जाने के पूर्व रुद्र सुलक्षण से मिला और उसने यह विवरण जान लिया कि लाक्षणिक देश में उसके सच्चे मित्र कौन कौन हैं? लेकिन इसका कोई अच्छा नतीजा नहीं निकला; इसका एक कारण भी था।

इन्द्रसेन के हाथों में पराजित सुलक्षण शासन कार्यों में असमर्थ साबित हुआ था। लाक्षणिक देश जब इन्द्रसेन के हाथों में आया तब उसने शासन कार्यों में अनेक सुधार किये और जानता की सद्भावना

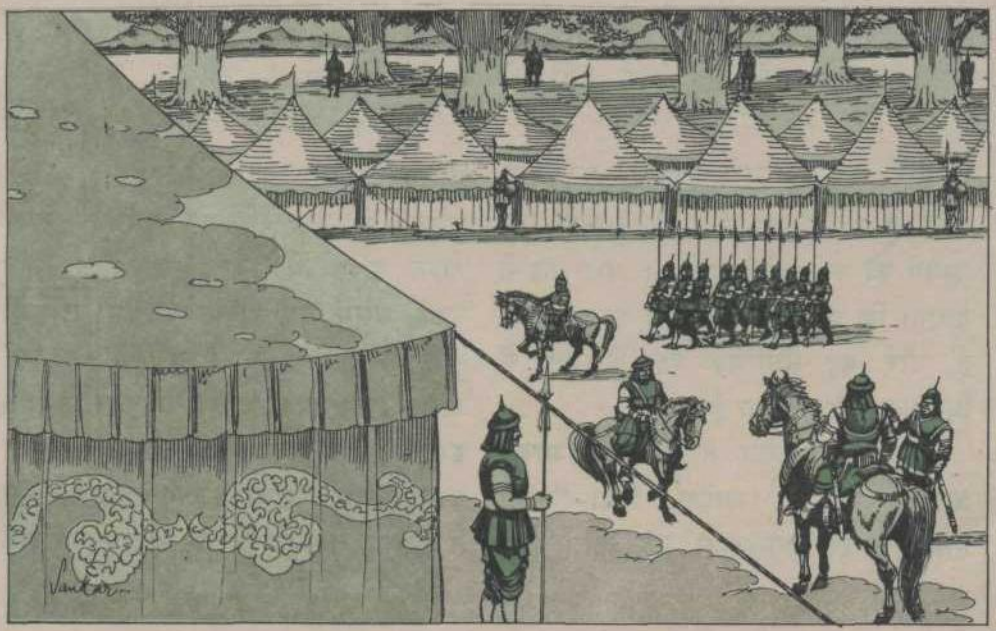

प्राप्त की। पहले सुलक्षण के जो मित्र थे, वे सब अब इन्द्रसेन के मित्र बन गये थे। इस वजह से भीमसेन का गुप्तचर रुद्र आसानी से इन्द्रसेन के हाथ बंदी हो गया।

बन्दी रुद्र के द्वारा इन्द्रसेन तथा उसके मंत्री ने सौगंधिक देश के रहस्यों को जानने की बड़ी कोशिश की। परंतु रुद्र ने बताया कि वह लाक्षणिक देश का निवासी है और वह सौगंधिक देश के बारे में बिलकुल नहीं जानता है।

इस पर इन्द्रसेन ने क्रोध में आकर अपने मंत्री को आदेश दिया–"मंत्री महोदय, इस राजद्रोही को फाँसी पर लटकवा दो। इसकी मृत्यु से शत्रु राजा के गुप्तचरों का कार्य शिथिल पड़ जाएगा और शेष गुप्तचर भी जान के डर से अपने राज्य में भाग जायेंगे। शत्रु राजा भी हमारे साथ समझौते के लिए तैयार हो जाएगा।"

यह बात सुनकर रुद्र मुस्कुरा पड़ा और बोला–"आप मुझे राजद्रोही बताते हैं, लेकिन आप ने मुझे जिस घर में बन्दी बनाया है, उसी घर में तीन और राजद्रोही हैं। आप कृपया भलीभांति इसका दरियाफ़्त करवाइये; तब आपको असली बात का पता चल जाएगा।"

"तुम बेमतलब की बातें करना छोड़ असली बात बताओ। तुम्हारी चालें हमारे सामने काम नहीं दे सकतीं। समझें!" इन्द्रसेन ने पूछा।

रुद्र ने हँसकर उत्तर दिया–"उस मकान में एक बूढ़ा रहता है। उसके जमाने में इस देश पर सूर्यवंशी राजा राज्य करते थे। उस समय जो युद्ध हुआ, उसमें यह राज्य चन्द्रवंशी राजाओं के हाथों में आ गया। बूढ़े ने चन्द्रवंशी राजाओं को अपना शासक स्वीकार किया। इस तरह वह राजद्रोही बन गया। इसके बाद चंद्रवंशी राजा को सुलक्षण के पिता ने हराया, तब बूढ़े के पुत्र ने राजा सुलक्षण

के पिता की सेवा की और उसने भी इस प्रकार अपने पूर्व राजा के प्रति राजद्रोह किया। बूढ़े के पोते के जमाने में आप राजा सुलक्षण को भगाकर राजा बने। उसने इस संदेह से मुझे आपके हाथ सौंप दिया कि मैं राजा सुलक्षण का शायद मित्र हूँ। यह भी तो अपने पूर्व राजा के प्रति राजद्रोही है?"

ये बातें सुनने पर इन्द्रसेन का मन आन्दोलित हो उठा। उसने पल भर सोच कर गंभीर स्वर में कहा–"चाहे उन तीनों की बात जो भी हो, पर तुम निस्संदेह राजद्रोही हो!"

"बन्दी होने के एक पल पहले भी मैं राजभक्त था। राजभक्त और राजद्रोही के बीच केवल एक पल का अंतर होता है, महाराज! शायद आप इस सत्य से परिचित नहीं हैं।" रुद्र ने कहा।

"अरे मूर्ख! यदि तुम को फिर राजभक्त बनना है तो काल-चक्र को उल्टे घूमना होगा!" यों कहते इन्द्रसेन बाहर आ गया।

उसके पीछे मंत्री सुदर्शन भी बाहर आया और बोला–"महाराज, आप क्षमा कर दे तो रुद्र को राजभक्त बनाने में काल-चक्र को उल्टे घूमने की ज़रूरत नहीं होगी। इसका एक उपाय है। कृपया आप पहले पहले यह पत्र पढ़िये! आपको असली बात का अभी अभी पता चल जाएगा।" इन शब्दों के साथ मंत्री ने राजा के हाथ एक पत्र दिया।

उस पत्र को पढ़कर इन्द्रसेन घबरा उठा। अपने गुप्तचरों का नेता चारुदत्त भीमसेन के हाथों में पड़ गया है। भीमसेन ने उस पत्र के द्वारा यह सुझाव दिया था कि बिना किसी प्रकार के कष्ट पहुँचाये रुद्र को मुक्त कर दे तो वह चारुदत्त को मुक्त करने को तैयार है। अन्यथा वह भी वही व्यवहार करेगा जैसा व्यवहार उसके गुप्तचर के द्वारा किया जाएगा।

इस पर इन्द्रसेन ने अपने मंत्री से पूछा–"अब हमारा कर्तव्य क्या है?"

रुद्र को मुक्त करना ही एक मात्र उपाय है।" मंत्री सुदर्शन ने उत्तर दिया।

"तुमने बताया कि इसको राजभक्त बनाने का कोई उपाय है?" राजा इन्द्रसेन ने याद दिलाया।

"रुद्र जब हमारी सीमा को पार करेगा, तब वह राजभक्त बन जाएगा। राजभक्त और राजद्रोही के बीच केवल सीमा की लकीर रुकावट है।" सुदर्शन ने कहा।

"बस, यही है? तो मैं ये जो युद्ध कर रहा हूँ, उनका...?" इन्द्रसेन ने पूछा।

"महाराज, ये सब बेकार हैं! जनता के लिए शासन प्रधान है, शासक नहीं! जैसे राजभक्त और राजद्रोही शब्द बेमतलब के हैं, वैसे ही अपने व पराये देशवाले शब्द भी अर्थहीन हैं। आप युद्ध करके सौगंधिक देश को अपना बनाना चाहते हैं, इससे क्या होगा? अनावश्यक खूनखराबी, अबोध लोगों की बलि होगी। आपकी इच्छा की पूर्ति के लिए एक मार्ग और है। वह है, भीमसेन के साथ मैत्री!" मंत्री सुदर्शन ने समझाया।

राजा इन्द्रसेन को अपने मंत्री की बातें उचित प्रतीत हुईं। उसने रुद्र को तत्काल मुक्त किया और भीमसेन के साथ मैत्री की। बाद राजा को मालूम हुआ कि चारुदत्त बन्दी नहीं बना है, पर इन्द्रसेन को इस बात का पता न चला कि यह असत्य समाचार अपने मंत्री के द्वारा कल्पित है! यह बात गुप्त ही रह गई।

शिक्षक को दण्ड

यह घटना चालीस वर्ष पूर्व घटी सच्ची घटना है।

एक शहर की पाठशाला में रिवेरेण्ड अरुलस्वामी नामक एक शिक्षक थे। वह विद्यार्थियों के प्रति बड़ा स्नेह रखते थे, विद्यार्थी भी उन्हें हृदय से चाहते थे। वे हमें गणित पढ़ाते थे। मुझे गणित पसंद न था, पर उनके प्रति मेरे मन में गहरी श्रद्धा थी।

एक दिन वर्ग में एक विचित्र घटना घटी। पिछले दिन हमारे शिक्षक ने चार गणित के सवाल देकर घर पर जवाब लिख लाने को कहा था। हमारे वर्ग में एक को छोड़ सब गणित के जवाब लिख लाये। वह अकेला विद्यार्थी अपनी इस गलती पर लज्जित न हुआ, बल्कि इस बात का उसे अभिमान भी था।

अरुलस्वामी ने मंदहास करते वर्ग में प्रवेश किया। एक एक के गणित देख अंक भी देते गये। जब उस लड़के की बारी आयी, तब उसने साफ़ बताया कि उसने घर पर गणित के सवाल नहीं किये हैं। अरुलस्वामी ने पूछा–"क्या गणित का हल नहीं जानते थे?"

"नहीं, मै जानता था, फिर भी मैंने नहीं किया?" विद्यार्थी ने जवाब दिया।

"तुम प्रधानाध्यापक के कमरे में जाकर बेंत ले आओ।" शिक्षक ने कहा। विद्यार्थी तुरंत बेंत ले आया। शिक्षक ने उस विद्यार्थी को वर्ग के सामने खड़े होने का आदेश दिया। हम सबने सोचा कि हमारे शिक्षक उस विद्यार्थी को बेंत से मारेंगे।

मगर अरुलस्वामी ने स्वयं अपना हाथ बढ़ाकर कहा–"मैंने तुम्हें ऐसे गणित के सवाल दिये जो तुम्हें बिलकुल पसंद न थे, इसलिए तुम मुझे दण्ड दे सकते हो! मारो।"

विद्यार्थी एक दम कांप उठा। बेंत के छोर को शिक्षक के हाथ पर टिकाकर रो पड़ा और शिक्षक के पैरों पर गिरकर अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी। –एम. दण्डपाणी

ऋण-मुक्ति

एक गाँव में रंगनाथ नामक एक पक्का कंजूस था। धन तो काफ़ी जोड़ा, पर एक दरिद्र की ज़िंदगी जीता था।

कुछ समय बाद रंगनाथ की पत्नी का देहांत हो गया। उसके एक बुद्धू लड़का मात्र रह गया। रंगनाथ उसे सिर्फ़ कांजी पीने को देता था, इसलिए वह हमेशा खाने की चिंता में पड़ा रहता, कहीं एक कौड़ी मिल जाती तो दूकान में जाकर कुछ खरीद लेता और खाता।

रंगनाथ ने पैसे जोड़ने का एक उपाय किया। उसने अपने घर के एक कोने में एक गडढ़ा खोद दिया, उसमें एक घड़ा गाढ़ दिया, उसके ढक्कन में पैसे डालने लायक़ छोटा-सा छेद बनाया, ऊपर से देखने पर घड़े का पता न लगता था। रंगनाथ की जो आमदनी होती, उसमें से थोड़े से पैसे अपने खर्च के लिए रख लेता, बाक़ी पैसे घड़े में छेद की राह से डाल देता था।

अपने पिता की यह करनी बेटे ने देख ली, पर उसकी समझ में न आया कि उसका पिता इस प्रकार ज़मीन में पैसे क्यों डाल रहा है। एक दिन उसने अपने पिता से पूछा–"बाबूजी, तुम दूसरे जून के लिए चावल तक खरीदे बिना ये पैसे ज़मीन में क्यों छोड़ रहे हो?"

रंगनाथ ने समझाया–"बेटा, ज़मीन में हमारे ऋणदाता हैं। उन्हें हमें बहुत-सा धन देना है। हम गरीब हैं, इसलिए एक साथ पूरा ऋण चुका नहीं सकते, रोज़ थोड़ा-थोड़ा करके मैं उनका ऋण चुका रहा हूँ।"

इस बात पर बेटे ने विश्वास किया और सोचा कि उसके पिता इसी वजह से कंजूसी कर रहा है। उसके मन में ऋणदाताओं पर क्रोध भी आया। उसने

जीवनलाल मेहता

कहा–"बाबूजी, उन लोगों की वजह से हम अपना पेट काट रहे हैं। उन्हें ऋण चुकाना छोड़ हम दोनों जून भर पेट खा लें तो क्या होगा?"

अपने बेटे का यह रवैया देख पिता को लगा कि वह उसके प्रयत्न में अड़ंगा लगाना चाहता है, इसलिए उसको डराने के ख़्याल से रंगनाथ ने कहा–"बेटा, सुनो! हमारे ऋणदाता साधारण आदमी नहीं। अगर हम एक दिन पैसे डालना छोड़ दे तो वे लोग बड़ी बड़ी तलवार और भाले लेकर हमें मारने आ धमकेंगे। उन्हें देखते ही हमारे प्राण उड़ जाएँगे।"

रंगनाथ के दिमाग में ये बातें बैठ गईं।

जाड़े के दिनों में एक दिन रात को एक बैरागी भोजन के वक़्त आ पहुँचा और दर्वाज़ा ढकेलकर अंदर प्रवेश करते बोला–"आप धर्मदाता हैं। मुट्ठी भर खाना खिलाइये।"

इसे देख रंगनाथ को बड़ा गुस्सा आया। वह चिल्लाकर बोला–"क्या इसे तुम अपने बाप-दादे की बनवाई सराय समझते हो?"

बैरागी शंकित हो गया और बिनती के स्वर में बोला–"महाशय, खाने की बात भगवान जाने! मुझे आज की रात को बरामदे में सोने दो। बाहर बड़ी सर्दी पड़ रही है।"

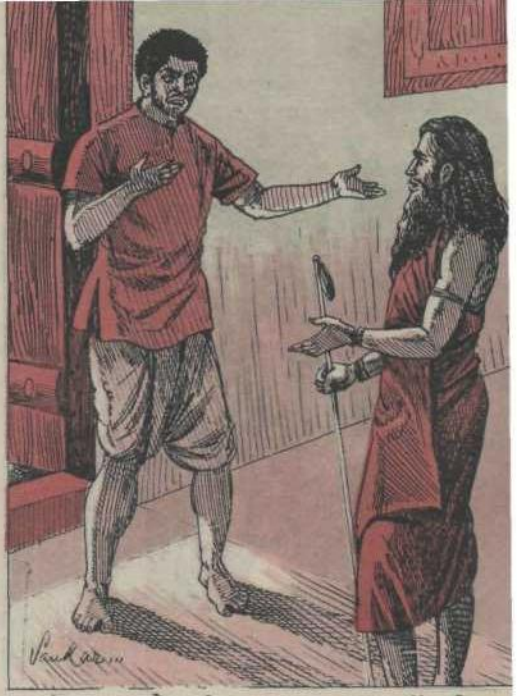

रंगनाथ को और गुस्सा आया–"अबे, तुम्हीं को बताता हूँ। क्या तुम्हारी सेवा करने के लिए मैं थोड़े ही तुम्हारा कर्जदार हूँ? जाओ।" यों कहते बैरागी की गर्दन पकड़कर उसे बाहर ढकेल दिया।

"मुझे नहीं तो और किसी के ज़रूर कर्जदार होगे, इसीलिए उपवास करते पैसे जोड़ रहे हो। तुम जो भी कमाते हो, वह किसी दूसरे का हाथ लगेगा, उसे भोगने का भाग्य तुम्हारी क़िस्मत में नहीं है!" बैरागी बोला।

"तुम जैसे पापियों को घर में क़दम रखने दूँ तो यही होगा। आज रात को

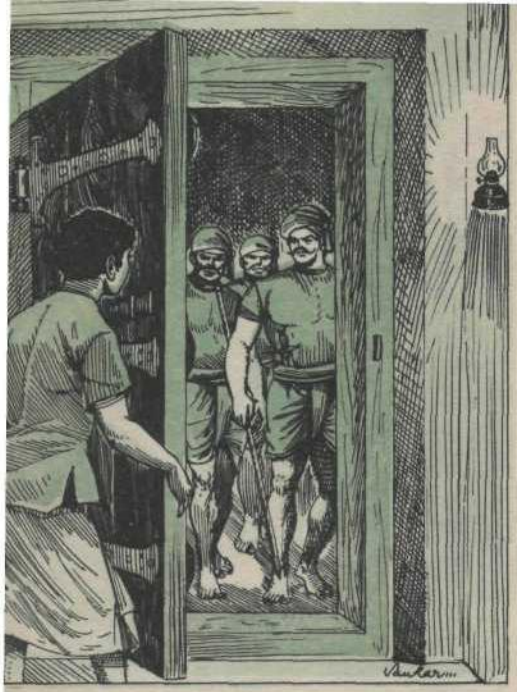

बाहर सर्दी में पड़े रहोगे तो तुम्हें पता चल जाएगा।" रंगनाथ ने कहा।

"समय आने पर तुम्हारी भी यही हालत होगी, इसलिए उछलो मत।" बैरागी ने कहा।

"अरे, क़िले जैसे घर के होते मेरी ऐसी हालत क्यों होगी? अबे, तुम जैसे क़मबख्तों के लिए ही ये सारी गलियाँ पड़ी हुई हैं।" यों कहते रंगनाथ ने झट से किवाड़ बंद किये।

कुछ दिन बाद रंगनाथ को अचानक कहीं यात्रा पर जाना पड़ा। उसने अपने बेटे से कहा–"बेटा! घर की ठीक से देख-भाल करना। रोज़ जो पैसे मिलते हैं, उन्हें ज़मीन में डाला दिया करो। रात के वक़्त वहीं पर खाट लगाकर सोया करो। मैं दो-तीन दिनों में लौट आऊँगा।"

रंगनाथ के बेटे के हाथ जो पैसे लगते, उन्हें ज़मीन में डाल देना उसे कतई पसंद न था। इसलिए वह खाने की चीज़ें ख़रीदकर खा लेता था, इस तरह दो दिन बीत गये। तीसरे दिन की रात को एक विचित्र घटना हो गई। आधी रात के वक़्त किसी ने दर्वाजा खटखटाया। रंगनाथ का बेटा उठ बैठा और जाकर किवाड़ खोल दिये। तब तीन चोर तलवार और भाले लेकर घर के भीतर घुस पड़े।

उन्हें देखते ही रंगनाथ के बेटे को अपने पिता की बातें याद आ गईं। उसने सोचा कि ये लोग ज़रूर ऋणदाता होंगे। उसने पिछले दो दिनों से ज़मीन में पैसे डाले नहीं थे। इसलिए अपने पिता के कहे अनुसार वे लोग आ गये हैं।

यह सोचकर उसने चोरों से कहा–"हे ऋणदाताओ, मुझे माफ़ कर दो। यह बात सच है कि दो दिनों से मेरे हाथ कुछ पैसे न लगे, इसलिए मैंने ज़मीन में पैसे नहीं डाले। मेरे बाप अगर घर में होते तो तुम लोगों के लिए कुछ न कुछ

डाल दिये होते। वे इस वक़्त घर में नहीं हैं। कल मैं तुम लोगों का पूरा पैसा उसमें डाल दूंगा। आज के लिए मुझे माफ़ कर दो।"

चोरों की समझ में न आया कि वह क्या कहता है। लेकिन यह बात स्पष्ट हो गई कि उनके वास्ते कहीं न कहीं पैसे डाले जा रहे हैं, इसलिए उनमें से एक ने कहा–"बताओ तो, तुम्हारा बाप पैसे कहाँ डाल रहा है? बहुत दिनों से वे पैसे हमारे हाथ न आये।"

इस पर रंगनाथ के बेटे ने खाट को सरकाया, जहाँ घड़ा खोदकर गाड़ दिया गया था, वह जगह उन्हें दिखा दी। चोरों ने उस जगह को खोदकर घड़े को ऊपर निकाला। उसमें बहुत से छुट्टे पैसे भरे थे। चोर घड़े को लेकर भाग गये।

दूसरे दिन रंगनाथ घर लौट आया। घड़े की जगह केवल गड्ढे को देख उसका दिल कांप उठा–"मेरा घड़ा! मेरे पैसे!" चिल्लाते-रोते वह अपने बाल नोचने लगा।

अपने बाप की यह हालत देख बेटे ने पूछा–"पिताजी, आप दुखी क्यों होते हैं? चोर थोड़े ही ले गये हैं?"

"तब तो क्या तुमने निकालकर कहीं छिपा रखा है?" रंगनाथ ने पूछा।

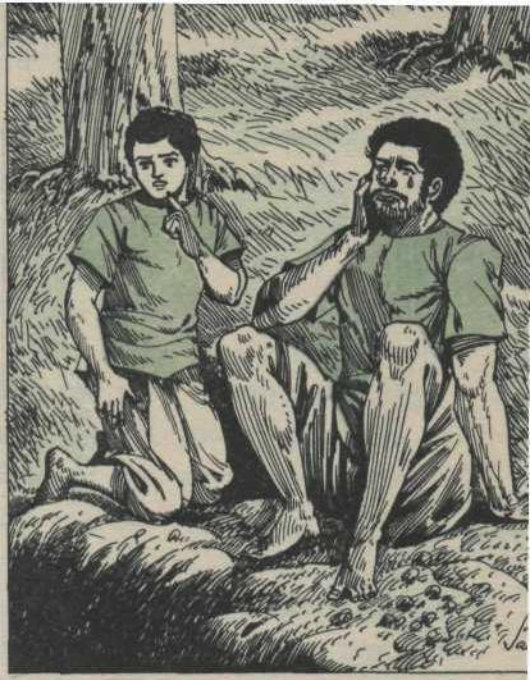

"तुम घबराओ मत! यह धन उन्हीं का था, इसलिए वे ले गये हैं।" बेटे ने समझाया।

ये बातें सुन रंगनाथ का क्रोध भड़क उठा। उसने अपने बेटे का गला दबाते पूछा–"कौन थे वे लोग? मेरा धन उनका कैसे हो सकता है?"

"यही बात है, पिताजी! उस दिन तुमने कहा था न, वे ही ऋणदाता आये थे। मैंने उन्हें खूब पहचान लिया है।" इन शब्दों के साथ बेटे ने रंगनाथ को सारी कहानी सुनाई।

"अरे, मेरी अक़्ल चरने गई थी, इसीलिए मैंने ऐसा कहा था। वे लोग

ऋणदाता नहीं थे! चोर थे। तुम्हारी बेवकूफी की वजह से मेरा घर डूब गया। अजनबी लोग आकर रात के वक़्त दर्वाजा खटखटा दे तो क्या अक़्ल रखनेवाला कोई दर्वाज़ा खोल सकता है?" रंगनाथ ने पूछा।

रंगनाथ के लड़के ने सोचा कि उसके द्वारा गलती हो गई है, भविष्य में ऐसा नहीं करना चाहिए।

इसके बाद रंगनाथ ने सोचा कि उसके साथ जो अन्याय हो गया है, इसके संबंध में अदालत में फ़रियाद करे तो अपने धन के बारे में सब लोगों को पता चल जाएगा, यह सोचकर वह रात के वक़्त चोरों को खोजते आसपास के सभी गाँव घूमने लगा। एक दिन आधी रात को घर लौटकर उसने अपने घर का दर्वाजा खटखटाया, लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। बेटे को कई बार पुकारा, फिर भी कोई फ़ायदा न रहा। अपने लड़के की मूर्खता पर पछताते रंगनाथ दर्वाज़े से सटकर लुढ़क पड़ा। सर्दी के मारे उसका शरीर ठिठुर गया। रात भर सर्दी में ठिठुरता रहा, सवेरे के होते उसकी आँखें झपक गयीं।

उस वक़्त उस रास्ते से चलनेवाले बैरागी ने रंगनाथ को थपकी देकर जगाया और पूछा–"अजी, क़िले जैसे बड़े मकान के होते तुम इस सर्दी में गली में क्यों लेटे हो?"

"भाई साहब! क्या बताऊँ? उस दिन तुमने जो बातें कहीं, वे शाप बनकर मुझे लग गईं, मैंने अपना धन न किसी को दान में दिया और न खाया ही था, सारा का सारा चोरों के हाथ चला गया।" रंगनाथ ने कहा।

"ऐसा मत सोचो। वे लोग चोर नहीं, ऋणदाता हैं। तुम्हारी ऋण-मुक्ति हो गई, इसके लिए खुश हो जाओ।" यों कहते बैरागी आगे बढ़ गया।

उस दिन से रंगनाथ का मन बदल गया। वह भर पेट खाते, दूसरों को भी खिलाते आराम से अपने दिन बिताने लगा।

तावीज की महिमा

एक दिन सवेरे एक नगर में एक मोटा-ताजा आदमी आ पहुँचा। उसका शरीर भारी था, वह लंबा भी था। वह स्थूलकाय व्यक्ति एक काला वस्त्र अपने शरीर पर लपेटे हुए था। उसे देख बच्चे डर गये और भाग गये। औरतों ने घर के किवाड़ बंद कर लिये।

वह स्थूलकाय व्यक्ति बड़ी मुश्किल से अपने शरीर को चलाते चिल्लाने लगा– "तावीज़ की महिमा जानना चाहते हो, तो जल्दी आ जाओ।" मगर लोगों ने उसे जादूगर समझा, इसलिए किसी ने भी उसके समीप जाने की हिम्मत नहीं की।

मगर उस नगर में माधव नामक एक व्यक्ति अकेला था। उसमें तावीज़ की महिमा जानने की इच्छा हुई। उसने स्थूलकाय के निकट पहुँचकर पूछा–"भाई, मुझे तावीज़ की महिमा दिखाओ तो।"

स्थूलकाय ने माधव की ओर एड़ी से लेकर चोटी तक देखा और कहा–"चलो, मेरे साथ।" इसके बाद वह स्थूलकाय व्यक्ति माधव को शहर के बाहर ले गया, उसने अपनी भुजा से बंधे तावीज़ को खोल दिया, तब उतनी बड़ी भुजा से बंधा तावीज़ एक साधारण आदमी की भुजा से बंधने लायक़ छोटा हो गया।

"क्या यही तावीज़ की महिमा है?" माधव ने सकपकाकर कहा।

"अरे, अभी तुमने इसकी महिमा कहाँ देखी! मैं इसे तुम्हारी भुजा से बांधकर चला जाता हूँ। मैं तुम्हारी आँखों से जब ओझल हो जाऊँगा, तभी तुम्हें इसकी महिमा मालूम हो जाएगी। यदि तुम इससे अपना पिंड छुड़ाना चाहते हो तो इसे किसी दूसरे की भुजा पर बांध देना होगा। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय

राजेश कुमार

नहीं है।" इन शब्दों के साथ स्थूलकाय व्यक्ति ने माधव की भुजा पर तावीज़ बांध दिया और वहाँ से जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते चला गया। थोड़ी ही देर में वह स्थूलकाय व्यक्ति ओझल हो गया।

माधव स्थूलकाय व्यक्ति की ओर देखता रहा। उसके ओझल हो जाने के बाद माधव ने अपनी भुजा से बंधे तावीज़ को देखा तो वह चौंक पड़ा। उसने जब अपने शरीर पर नज़र डाली तब उसे लगा कि वह बेहोश होता जा रहा है। क्योंकि माधव स्थूलकाय हो चुका था।

माधव अपना सिर पीटते हांफते उसी दिशा में दौड़ पड़ा जिस ओर वह व्यक्ति गया था। गली का नुक्कड़ पार करते ही उसे दूर पर एक पतला आदमी काला वस्त्र ओढ़े जाते हुए दिखाई दिया। माधव को तावीज़ की महिमा मालूम हो गई थी। उस तावीज़ से पिंड छुड़ा ले तो वह फिर साधारण आदमी बन सकता है।

माधव जब अपने घर पहुँचा तब कुछ जान-पहचान के लोग उसे देख अचरज में आ गये और बोले–"हमने पहले ही सोचा था कि इसमें कोई दगा है! उस क़मबख्त तावीज़ को तोड़कर फेंक दो।"

उन लोगों की सलाह पाकर माधव ने तावीज़ खोलकर दूर फेंक दिया। मगर दूसरे ही क्षण तावीज़ आकर माधव की भुजा में छिपक गया। साथ ही वह अंगारों की तरह अब जलने भी लगा। माधव ने उसे खोलने कां प्रयत्न जब बंद किया, तभी वह ठण्डा हो गया।

अब माधव के सामने बड़ी समस्या पैदा हो गई थी। उसने महीने भर के लिए जो अनाज इकट्ठा कर रखा था, वह दो दिन के लिए भी पर्याप्त न हुआ। मेहनत करके पेट भरनेवाले माधव को स्थूलकाय हो जाने के कारण बाहर चलना भी मुश्किल हो गया था। अपने पास जो कुछ था, उसे खाने की चीज़ें खरीदने के लिए बेच दिया, तब जाकर उसे लगा कि

अब मरने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं है। वह गाँव के बाहर जा मौत का इंतज़ार करने लगा।

दुपहर के वक़्त पड़ोसी गांव से आनेवाला एक दुबला-पतला व्यक्ति बरगद के नीचे आराम करने आया। माधव के भारी-भरकम शरीर को देख बोला–"महाशय, मेरा नाम शंकर है। क्या शरीर को मोटा-ताज़ा बनाने के लिए तुम कोई उपाय जानते हो तो बता सकते हो? मेरा शरीर कंकाल जैसा है, इसलिए कोई अपनी लड़की देने को भी तैयार नहीं होता।"

ये बातें सुन माधव उत्साह में आकर बोला–"यह सब तावीज़ की महिमा है!"

माधव ने अपनी भुजा से तावीज़ को खोल दिया, शंकर की भुजा में बांधते हुए समझाया–"तुम्हारी आँखों से मेरे ओझल हो जाने के बाद ही तुम्हें इसकी महिमा मालूम हो जाएगी। यदि तुम इस तावीज़ से पिंड छुड़ाना चाहोगे तो तुम्हें इसे किसी दूसरे की भुजा में बांध देना होगा। तुम भूल से भी सही, इसे निकालकर मत फेंको। निकालकर फेंकोगे तो यह तुमको आग की तरह जला देगा।" यों समझाकर वह अपने रास्ते चला गया।

शंकर माधव की ओर तब तक देखता रहा जब तक वह उसकी आँखों से ओझल न हुआ। तब उसने अपने शरीर की ओर देखा तो उसका सिर चकरा गया। उसका

शरीर बहुत भारी हो गया था। इसके बाद वह अपने गाँव पहुँचा, लेकिन उसके भारी शरीर को देख किसी ने अपनी लड़की नहीं दी। इस पर निराश हो फिर वह शहर में लौट आया।

शंकर को अब लगा कि जब वह दुबला-पतला था, तभी उसकी हालत अच्छी थी। उसके सामने खाने की समस्या पैदा हो गई। उसने गेरुए वस्त्र पहन लिए, दर-दर घूमते भीख माँगकर अपने दिन काटने लगा। मगर घूमने के लिए भी उसका भारी शरीर काम न देता था। दो-चार घर घूमता तो वह थक जाता और हाँफने लगता था।

एक दिन शंकर ने किसी के घर जाकर दर्वाज़ा खटखटाया। उस घर में एक ब्रह्मचारिणी रहती थी। वह देखने में बदसूरत थी, इसलिए उसकी शादी न हो पाई थी। उसने किवाड़ खोलकर गेरुए वस्त्र पहने खड़े हुए शंकर को देख पूछा–"स्वामी, क्या सुंदर दीखने के लिए कोई उपाय है?"

उस औरत की बातें सुनते ही शंकर का दिमाग तेज़ी के साथ काम करने लगा। उसने कहा–"क्यों नहीं? तावीज़ है।"

"तब तो वह तावीज़ मुझे देने की कृपा कीजिए।" ब्रह्मचारिणी ने कहा।

झट शंकर ने अपनी भुजा से तावीज़ खोल दिया, ब्रह्मचारिणी की भुजा में बांधते कहा–"मेरे चले जाने के बाद ही तुम्हें इस तावीज़ की महिमा का पता चलेगा। अगर तुम इससे पिंड छुड़ाना चाहते हो तो तुम्हें इसे किसी दूसरे की भुजा में बाँधना होगा। इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं है।" यों कहकर वह जल्दी वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

ब्रह्मचारिणी बड़ी प्रसन्नता के साथ घर के भीतर गई, अपने सौंदर्य को देखने के लिए वह आदम कद के आइने के सामने जा खड़ी हुई। अपने रूप को देखते ही वह चौंक पड़ी। क्योंकि उस आईने में उसके शरीर का एक चौथाई

हिस्सा भी दिखाई न देता था। वह फ़र्श पर गिरकर लोटते शाम तक रोती रही।

अगल-बगल के लोगों ने आकर उसे देखा। उनमें उस नगर की युवरानी की परिचारिका भी थी। ब्रह्मचारिणी को देखते ही वह ठठाकर हँस पड़ी और बोली–"युवरानी के हँसे चार साल हो गये हैं। वह हमेशा दुखी रहती हैं। तुम्हें देखने पर वह ज़रूर हँसेंगी।" इसके बाद वह परिचारिका ब्रह्मचारिणी को उद्यान में स्थित युवरानी के पास ले गई।

युवरानी एक टीले पर चिंता मग्न बैठी हुई थी। भूतकी जैसे लगनेवाली ब्रह्मचारिणी को नखरे के साथ चलते देख वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"इतने सालों बाद तुम मुझे हंसा सकी। तुम में कौन-सी महिमा है?" युवरानी ने ब्रह्मचारिणी से पूछा।

"यह महिमा मेरी नहीं, तावीज़ की है।" ब्रह्मचारिणी ने जवाब दिया।

"जरा दिखाओ तो वह तावीज़! फिर तुम्हें लौटा देती हूँ।" युवरानी ने पूछा।

"इसे अपनी भुजा में बांधकर देखिए, तब पता चलेगा।" इन शब्दों के साथ ब्रह्मचारिणी ने अपना तावीज़ निकालकर युवरानी की भुजा में बांध दिया और कहा–"जब आप किसी दूसरे की भुजा में इसे बांध देंगी, तभी आप इससे पिंड छुड़ा सकती हैं।" यों कहकर वह जल्दी-जल्दी वहाँ से अपने घर चली गई।

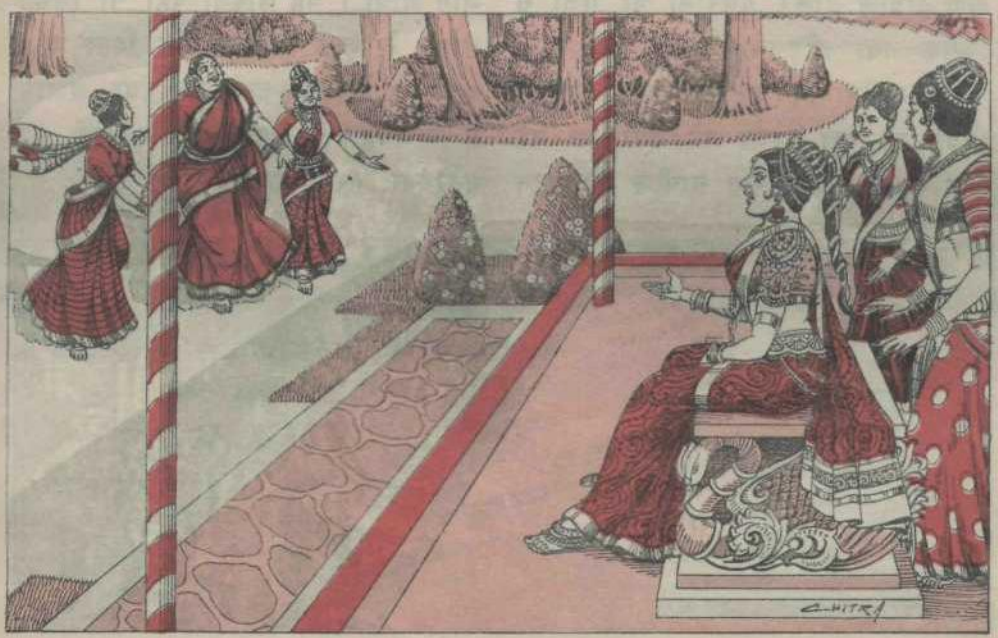

ब्रह्मचारिणी के जाते ही युवरानी पालकी पर बैठकर राजमहल की ओर चल पड़ी। थोड़ी दूर जाने पर कहारों को लगा कि पालकी भारी होती जा रही है। उसी वक्त पालकी पर बैठी युवरानी ज़ोर से चिल्ला उठी। इस घबराहट में कहारों ने पालकी को नीचे गिरा दिया। पालकी टूट गई। टूटी हुई पालकी में से युवरानी भूतकी जैसी उठ खडी हुई। परिचारिकाएँ बडी मुश्किल से उसे चलाते अंतःपुर में ले गईं। अपने पिता को देखते ही युवरानी दहाड़ें मारकर रो पडी और उसने सारा समाचार उसे कह सुनाया।

अपनी इकलौती बेटी की यह हालत देख राजा ने गुस्से में आकर तावीज को खोल दूर फेंक दिया। लेकिन दूसरे ही क्षण तावीज़ आकर युवरानी की भुजा से छिपक गया और वह अंगारों की भांति उसके शरीर को जलाने लगा। उसकी पीड़ा को देख राजा को दया आ गई और राजा ने खुद उस तावीज़ को पहन लिया। युवरानी पहले की तरह पतली बन गई, मगर राजा स्थूलकाय हो गया। राजा के सामने खाने की समस्या तो न थी, लेकिन पोशाक, सिंहासन, किरीट, इज्ज़त आदि बडी समस्याएँ बन बैठीं।

दूसरे दिन राजा ने ब्रह्मचारिणी को बुला भेजा, उसके द्वारा यह पता लगाया कि किसने उसे तावीज़ दिया है, तब शंकर के द्वारा उसने माधव का भी पता लगाया, मगर माधव को तावीज़ देनेवाले का पता राजा न लगा सका। आखिर राजा ने दरबार में तावीज़ का सारा हाल सुनाकर यह घोषणा की कि जो आदमी इस तावीज़ को बंधवा देगा, उसे खाने-पीने, कपडे वगैरह का प्रबंध किया जाएगा।

तब एक आदमी तावीज़ बंधवाने को आगे आया। वह आदमी वही था जिसने माधव के हाथ तावीज़ बांध दिया था। वह फिर से स्थूलकाय बन गया, आराम से राजमहल में खाते-पीते युवरानी का मनोरंजन करने लगा।

जादू का दूधवाला

पन्ना नामक गाँव में राम्ना नामक एक धोखेबाज़ दूधवाला था। अपने दूध में सस्ती चीज़ें मिलाकर वह बेचा करता था। उसके पास बहुत-सी गायें और भैंसें थीं। दूध भी पर्याप्त मात्रा में दिया करती थीं। मगर धन के लोभ में पड़कर गाँवालों को मिलावट के दूध बेच देता और काफ़ी रुपये कमाया करता था।

उसी गाँव में नीलू नामक एक दूधवाला था। वह बड़ा ही ईमानदार था। उसके पास सिर्फ़ दो गायें और दो भैंसें थीं। दूध भी कम देती थीं। उसी दूध को बेच कर नीलू और उसकी औरत अपने पेट भरते थे। उसके दोस्तों ने नीलू को समझाया कि वह भी दूध में पानी मिला कर बेच दे, मगर उसने उसकी बातों पर ध्यान न दिया। उसका विश्वास था कि धोखा देना पाप है। नीलू के दूध में मिलावट न थी, इसलिए वह उस दाम पर अपने दूध बेच न पाता था, जिस दाम पर राम्ना बेचा करता था। इस वजह से उसे दोनों जून भर पेट खाना भी दूभर हो गया था। कई बार उसके परिवार ने उपवास भी किये; फिर भी वह अपनी गाय और भैंसों को चराने में ज़रा भी असावधानी न दिखाता था।

पर उधर राम्ना के धन की प्यास की कोई सीमा न थी। वह दूध से प्राप्त धन से सोना ख़रीद लेता था, मगर वह अपनी गायों तथा भैंसों को ठीक से चारा तक न देता था। इसलिए उसकी गायें और भैंसें भी दिन प्रति दिन कमज़ोर होती गयीं। उनका दूध देना भी कम होता गया। फिर भी राम्ना और उसकी औरत उस दूध में मैदा या पानी मिलाकर ज़्यादा नफ़ा उठाते थे। उस मिलावट वाले दूध

ए. सी. सरकार, जादूगर

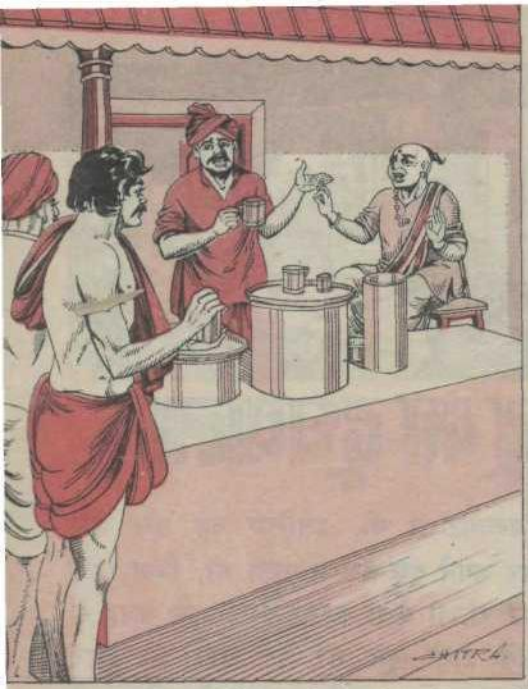

का स्वाद बचाये रखने के लिए वे उसमें थोड़ी चीनी भी डाल देते थे। इस तरह वे अपने सभी ग्राहकों को दूध पहुँचा पाते थे।

फिर भी राम्ना जो दूध देता था, उसके स्वाद में फरक़ दिखाई देता था। लोग तरह-तरह से शिकायत करने लगे, लेकिन राम्ना निस्संकोच उन्हें समझा देता था–"महाशयो, मेरी गायें और भैंसें जो चारा खाती हैं, उसमें परिवर्तन हो गया है। आजकल मेरे मवेशी हरी घास के बदले सूखी घास खाते हैं। इसलिए दूध के स्वाद में परिवर्तन का होना सहज है। आप लोग यह बात मत भूलिये कि सूखी घास खानेवाली गायों तथा भैंसों का दूध तबीयत के लिए बहुत ही अच्छा है! चाहे तो आप किसी आयुर्वेद के वैद्य से पूछ लीजिए।" यों वह अपने ग्राहकों को समझा देता; साथ ही उसने अपने गाँव के तंतुशर्मा नामक एक वैद्य को घूस देकर उससे कहलाया कि उसका कहना सच है।

"हाँ, हाँ, यह बात हमारे आयुर्वेद में स्पष्ट बताई गई है कि सूखी घास खानेवाली गायों तथा भैंसों का दूध आयु की वृद्धि करते हैं।" वैद्य तंतुशर्मा ने लोगों को समझाया। इस तरह राम्ना का व्यापार बढ़ता ही गया, लेकिन बेचारा नीलू ईमानदार होते हुए भी अनेक प्रकार की यातनाएँ झेलने लगा।

उस गाँव की पूर्वी दिशा में चौधरियों का एक परिवार था। उस परिवार के कुछ रिश्तेदार शहर में रहते थे। एक शादी के अवसर पर चौधरी के घर दूर-दूर के उनके रिश्तेदार आये। चौधरी के छोटे भाई दीनू चौधरी के रवि तथा छवि नामक दो पुत्र बड़े ही अक्लमंद थे। रवि अट्ठारह साल का था, जादू की विद्या में पारंगत था।

पहली बार वे दोनों भाई देहात में आये थे, इसलिए बड़े ही उत्साह के साथ उन दोनों ने गाँव का कोना-कोना छान

डाला। कुम्हार का चाक, जुलाहे का करघा, तेल का कोल्हू–ये सब उन्हें बड़े ही विचित्र मालूम हुए। सवेरे से लेकर शाम तक वे दोनों भाई गाँव का चक्कर लगाते रहें।

अनेक रिश्तेदारों के आने के कारण चौधरी के परिवार को ज्यादा दूध की जरूरत आ पड़ी। इस पर राम्ना ने दूध का प्रबंध किया। दोनों भाइयों को सवेरे दूध पीने की आदत थी। परंतु वे शहर में मिलावट के दूध ही पिया करते थे, इसलिए उन्हें राम्ना के दूध में मिलावट का पता न चला।

एक दिन दोनों भाई गाँव का चक्कर लगाते एक मैदान में पहुँचे, वहाँ पर मवेशियों को चरानेवाले बदनसीब नीलू को देखा। गायें और भैंसें चुपचाप घास चर रही थीं, इधर नीलू बंसी बजा रहा था। वह बंसी बजाने में बड़ा ही निपुण था। उसके संगीत ने दोनों भाइयों को अपनी ओर आकृष्ट किया। दोनों नीलू के पास गये और उसका संगीत सुनकर बहुत ही खुश हो गये।

नीलू ने जब बंसी बजाना समाप्त किया तब रवि ने उससे पूछा–"भाई साहब, तुम ऐसे मधुर संगीत कैसे सुना पा रहे हो?"

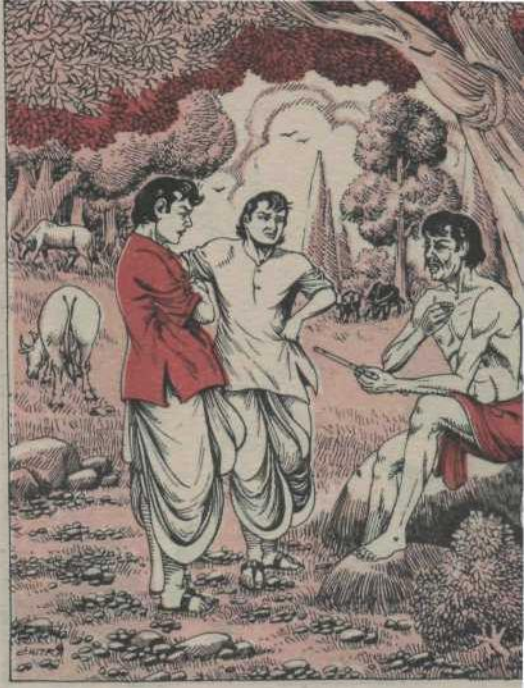

"भैया, मैं खुद सुना नहीं पाता हूँ। मेरा दुख ही इस प्रकार संगीत पैदा कर रहा है।" नीलू ने जवाब दिया।

"दुख? कैसा दुख है, भाई?" रवि ने उत्सुकता में आकर पूछा।

"एक प्रकार का दुख नहीं, मेरे लिए तो न खाना है और न कपड़ा ही! हम लोग अकसर उपवास किया करते हैं।" नीलू ने कहा।

यह बात सुनने पर नीलू का दिल पिघल गया। उसने नीलू की हालत जानने की इच्छा प्रकट की; सहानुभूति दिखानेवाले को पाकर नीलू ने अपनी बुरी हालत और राम्ना के द्वारा किये जानेवाले धोखे की कहानी भी कह सुनाई।

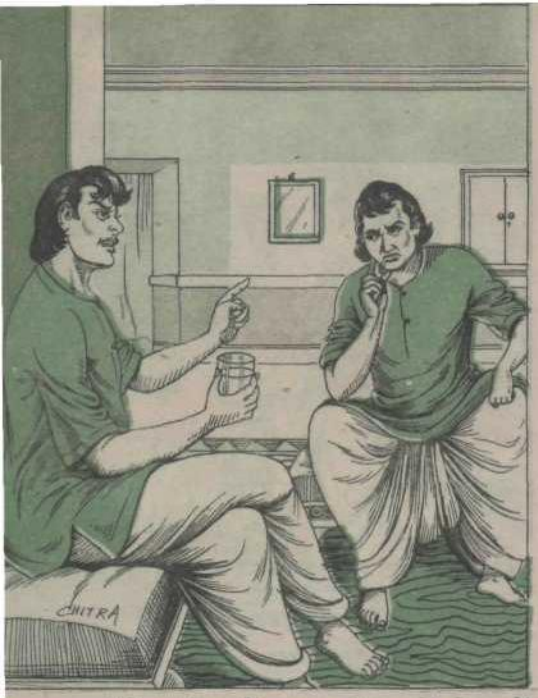

"ये सारी बातें तुम गाँववालों से क्यों नहीं कहते?" रवि ने पूछा।

"भाई, मेरी बात पर कौन विश्वास करेगा? गाँव का वैद्य तंतुशर्मा राम्ना का समर्थन करता है। गाँववाले तंतुशर्मा की बातों पर विश्वास करते हैं।" नीलू ने दीनतापूर्वक बताया।

"किसलिए ऐसा करते हैं? तंतुशर्मा क्या भूत वैद्य है? या मंत्र-तंत्र जानते हैं? क्या जब तब जादू दिखाते हैं?" रवि ने फिर पूछा।

"तुमने ठीक कहा। तंतुशर्मा दवा-दारू ही नहीं करता, बल्कि मरीज़ों पर तावीज़, मंत्र-तंत्र का भी प्रयोग करते हैं। गाँववालों का विश्वास है कि तंतुशर्मा के घर के अहाते में जो बरगद का पेड़ है, उस पर पालतू भूतों का एक जोड़ा है। आमावास्या की रात में वह उन भूतों का आवाहन करता है।" नीलू ने समझाया।

"क्या तुम अपने मवेशियों का एक गिलास दूध दे सकते हो?" रवि ने पूछा।

उस दिन दोनों भाई नीलू के यहाँ से एक गिलास भर दूध ले गये, गरम करके पी लिया। उसका स्वाद बढ़िया था।

"इसमें कोई दगा है। उसका पता लगाकर हमें चोर को पकड़ना होगा।" रवि ने कहा।

"कैसे?" छवि ने पूछा।

रवि थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला–"छवि, मुझे इसका उपाय मालूम हो गया! जादू के द्वारा हम पता लगा सकते हैं।"

इसके बाद रवि ने गाँववालों के मनोरंजन के लिए जादू के प्रदर्शन का प्रबंध किया और तंतुशर्मा को उसके मुख्य अतिथि के रूप में निमंत्रण दिया।

"महाशय! आप सभी विद्याओं में सिद्धहस्त हैं। हम तो लड़के हैं। आपके आने पर हमारा उत्साह बढ़ेगा।" यों रवि ने तंतुशर्मा की बड़ी तारीफ़ की। तंतुशर्मा अपनी तारीफ़ सुनकर फूला न

समाया, वह उस कार्यक्रम में आकर अगली पंक्ति में बैठ गया।

रवि ने बताया कि जादू के प्रदर्शन के अंतिम कार्यक्रम में दूध से संबंधित एक कार्यक्रम होगा। तब राम्ना तथा नीलू के द्वारा एक-एक गिलास में दूध मँगवाया। अब गिलासों पर दोनों के निशान लगवाये और सबके सामने उन गिलासों को मेज़ पर रख दिया।

इसके बाद रवि ने अपने प्रदर्शन का प्रारंभ किया। उसने अनेक अद्‌भुत प्रयोग करके प्रेक्षकों को चकित कर दिया। गाँववालों को बरबस विश्वास करना पड़ा कि रवि भूत-प्रेतों को वशीभूत करने की अद्‌भुत शक्तियाँ रखता है। जब गाँववालों के हृदयों में यह विश्वास पैदा हो गया, तब रवि ने चोर का पता लगाने का कार्यक्रम प्रारंभ किया।

रवि ने गाँववालों से कहा—"मेरे अधीन में जो भूत-प्रेत हैं, वे अधिक श्रम करने के कारण प्यासे बन गये हैं। मनुष्य जैसे वे भी काफ़ी पीना ज़्यादा पसंद करते हैं। मैं अब उनके वास्ते काफ़ी तैयार करता हूँ। भाइयो और बहनो, हम मानव हैं। इसलिए ऐसे पदार्थ खाने-पीने के प्रयत्न करते हैं जिनमें किसी प्रकार की मिलावट न हो। भूतों की भी यही बात

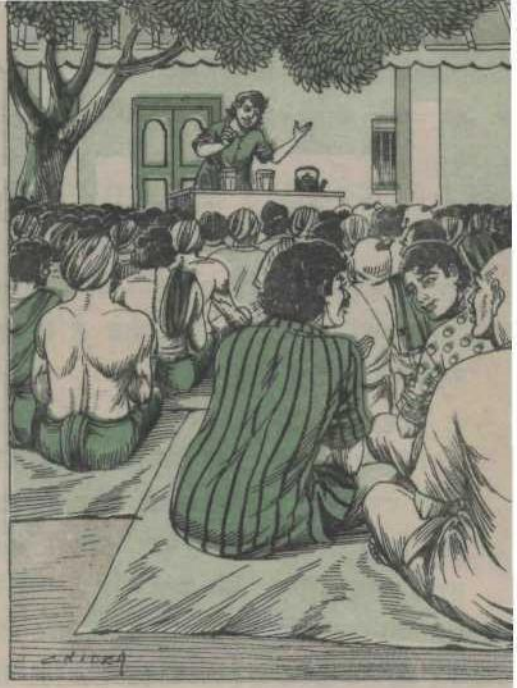

है। उन्हें मिलावटवाले पदार्थ खाने-पीने को दे तो वे हलचल मचायेंगे। मिलावट को पहचानने में वे हम से कहीं ज़्यादा होशियार हैं। यह बात मैं अभी आप लोगों को साबित करके दिखाता हूँ।"

इन शब्दों के साथ रवि ने मेज़ पर दो खाली गिलास रखे। एक पात्र में स्थित काफ़ी का डिकाक्शन थोड़ा-थोड़ा दोनों गिलासों में डाल दिया। इसके बाद नीलू द्वारा दिये गये दूध को एक गिलास में डाल दिया, तब एक बढ़िया रंग की काफ़ी तैयार हो गई। इसी प्रकार रवि ने राम्ना के द्वारा दिये गये दूध को दूसरे

गिलास में डाल दिया, तब दूसरे गिलास का अर्क काली स्याही के रूप में बदल गया।

इस पर रवि ने कहा–"भाइयो और बहनो, राम्ना के मिलावटवाले दूध को भूत भी स्वीकार नहीं कर रहे हैं। आप लोग मानव होते हुए भी ये दूध पीते हैं। यह कैसें आश्चर्य की बात है!"

रवि के जादू ने गाँववालों पर ऐसा प्रभाव डाला कि उन लोगों ने रवि की बातों पर पूरा विश्वास किया और राम्ना की निंदा की। इसके बाद राम्ना की सारी दगेबाजी की पोल खुल गई। उसके घर की तलाशी लेने पर मैंदा, आटे के कई बोरे बरामद हुए। गाँव के लोगों ने राम्ना को गाँव से भगा दिया और उसके सारे मवेशियों को नीलू को सौंप दिया। तब जाकर तंतुशर्मा ने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया। उसने ग्रामवासियों से क्षमा माँगी। जुर्माना भी चुकाया, तब लोगों ने उसे गाँव में रहने दिया।

शहर में लौटने पर रवि और छवि ने यह समाचार अपने मित्रों को सुनाया, मित्रों ने रवि से पूछा–"रवि, तुमने दूध को स्याही के रूप में कैसे बदल डाला?"

"टिंचर आयोडीन!" रवि ने झट जवाब दिया।

"क्या घावों पर लगानेवाली दवा?" मित्रों ने रवि से पूछा।

"हाँ, उसे पानी में मिलाकर मैंने काफ़ी के डिकाक्शन के रंग में तैयार किया। बाक़ी सारा जादू रसायन का प्रयोग ही है। आयोडीन आटेवाले पदार्थ का स्पर्श होते ही काला हो जाता है। मैं जानता था कि राम्ना के दूध में आटे का पदार्थ बहुत ज़्यादा है। आटे की मिलावट होने के कारण ही राम्ना का दूध काले रंग का हो गया। नीलू का दूध स्वच्छ था। इसलिए वह काला नहीं हुआ।" रवि ने कहा।

"शाबास रवि! तुमने कमाल किया!" मित्रों ने रवि की तारीफ़ की।

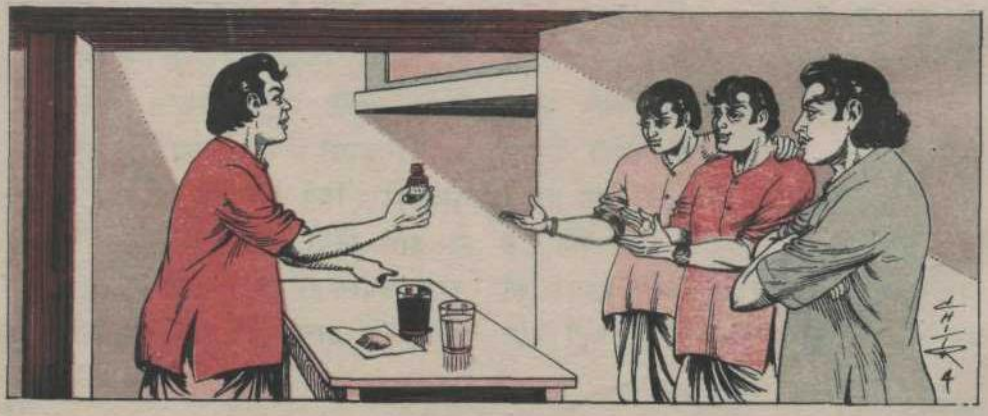

आलसी

बात बहुत पुरानी है। एक राजा को देरी से जागने की आदत थी। रोज़ नींद से जागकर कालकृत्य समाप्त करता और दरबारियों को दर्शन देता, तब तक खाने का वक्त हो जाता था।

यह आदत उधर राजा तथा इधर दरबारियों को भी कुछ तक़लीफ़ मालूम होती थी। इस आदत को छुड़ाने के लिए राजा ने मंत्री की सलाह माँगी।

"महाराज, रोज़ सवेरे मधुर संगीत सुनाकर आपको जगाने के लिए कुछ बजंत्रियों को नियुक्त करना अच्छा होगा।" मंत्री ने सलाह दी।

राजा ने उसी दिन कुछ बजंत्रियों को नियुक्त किया। उस दिन सवेरे बजंत्रियों ने बड़ा ही मधुर संगीत सुनाया। इससे राजा की निद्रा का भंग हो गया। अपनी मीठी नींद को बिगाड़ने की वजह से राजा को उन पर बड़ा क्रोध आया। तुरंत राजा ने अपने सेवकों को बुलाकर आदेश दिया कि प्रत्येक को चार कोड़े लगाकर वहाँ से भगा दे, तब जाकर वह फिर सो गया।

दूसरे दिन सवेरे राजा ने किसी भी तरह से जागने का निश्चय किया। सवेरे बजंत्री तो आ गये, पर यह सोचकर चुपचाप चले गये कि बाजे बजाने से कोड़े की मारें खानी पड़ेंगी, इसका नतीजा यह हुआ कि राजा देरी से नींद से जाग पड़ा। राजा को याद आया कि बजंत्रियों ने उसे जगाया नहीं। तुरंत राजा ने बजंत्रियों को बुला भेजा, इस अपराध में सबको कोड़ों की सज़ा सुनाई कि राजा ने उन्हें जो आदेश दिया, उसका पालन नहीं किया गया है।

बोलनेवाला बछड़ा

एक किसान के पास गाय का एक बछड़ा था। वह किसान शादी-शुदा न था, इसलिए बछड़े को वह अपनी जान से ज्यादा चाहने लगा था। वह रोज़ यही सोचा करता कि भगवान ने बछड़े को इतना सुंदर पैदा किया है, उसे बोलने की भी शक्ति देते तो क्या ही अच्छा होता।

धीरे धीरे यह चिंता उसके लिए एक मानसिक बीमारी के रूप में परिणत हो गयी। उसके सामने जो भी आता, उससे वह यही सवाल पूछता–"क्या बछड़े को बोलने लायक़ बनाने का कोई उपाय नहीं है?"

"बछड़े का बोलना क्या है? तुम्हारा दिमाग़ तो खराब नहीं हुआ?" सबने उसे डांट बताई।

फिर भी किसान में कोई परिवर्तन न हुआ। उसने सुना था कि साधु-संत और योगी बड़ी-बड़ी महिमाएँ रखते हैं। इस पर उसके मन में यह आशा पैदा हो गई कि हिमालयों में जाकर किसी साधु से पूछने पर वह शायद बछड़े से बुलवा सकता है। तब उसने अपने बछड़े को पालने की जिम्मेदारी एक विश्वास पात्र नौकर को सौंप दिया और वह हिमालयों में चला गया। उसे वहाँ पर जो भी बैरागी दिखाई दिया, उसके सामने अपनी यह इच्छा प्रकट की, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा।

आखिर एक साधु ने उस किसान के हाथ एक जड़ी-बूटी देकर बताया कि उसे बछड़े को खिलाने पर वह बोलने लग जाएगा।

किसान बड़ी प्रसन्नता के साथ घर लौट आया। बछड़ा किसान को देखते ही रंभा उठा।

उमेश चन्द्र

किसान ने मन में सोचा–"इतने दिन तक मेरे दिखाई न देने पर यह कितना दुखी हुआ होगा!"

तब बछड़े को जड़ी-बूटी खिलाते बोला–"अब तुम बोलने लग जाओगे। तुम्हारे मन में जो बातें हैं, वे सब तुम मुझे सुना सकोगे।"

बछड़े ने जड़ी-बूटी के खाते ही पूछा–"इतने दिनों तक तुम कहाँ गये थे?"

किसान उछल पड़ा। उसने अपनी सारी तक़लीफ़ें सुनाकर बछड़े से कहा–"तुम धूप में मत घूमो, झोंपड़ी में जाकर आराम से सो जाओ।"

"आप तो आराम से बिस्तर पर सो जाते हैं, मैं पुआल पर सोता हूँ; तो नींद नहीं आती। अपना एक बिस्तर झोंपड़ी में डलवा दो तो मैं भी आराम से सो जाऊँगा।" बछड़े ने कहा।

"अबे, तुमने इतनी सारी बातें सीख लीं; गाँववालों को यह बात मालूम हो जाएगी तो तुम्हें नज़र लग जाएगी। भीतर चलो!" इन शब्दों के साथ किसान ने बछड़े को ले जाकर झोंपड़ी के भीतर बाँध दिया।

इसके बाद किसान भोजन करने बैठा, तब बछड़े ने चिल्ला कर कहा–"अजी मालिक!"

"क्या बात है, बे!" यों कहते किसान बछड़े के पास उठकर चला आया।

"अजी मालिक साहब! तुम अकेले ही खाना खाते हो? क्या हमें अपना पेट

काटना होगा। थोड़ा सानी-पानी मेरे लिए भी लेते आओ।" बछड़े ने हुकम दिया।

किसान ने चुपचाप उसकी आज्ञा का पालन किया।

"अजी, यह क्या? इस सानी में तुमने सारे पानी डाल दिये हैं। इसमें ककडी, तुरई, लौकी, कुम्हड़े वगैरह के दुकड़े डाल देते! खाना थोड़ा स्वादिष्ट भी तो हो!" बछड़े ने किसान को डाँटा।

किसान का चेहरा पीला पड़ गया। फिर भी उसने वैसा ही किया।

इस तरह बछड़ा किसान को हर चीज़ के लिए तंग करने लगा।

एक दिन रात को किसान सो रहा था, तब बछड़े ने चिल्ला कर कहा– "अजी, मालिक साहब! मच्छर काट रहे हैं।"

नींद के उचट जाने से किसान को बछड़े पर बड़ा गुस्सा आया। वह उठा, लाठी लेकर बछड़े को पीटने लगा!

मार खाकर बछड़ा चिल्लाने लगा– "अजी रामधन, महतो, देखो तो, मुझे बचाओ; ये मुझे कैसे मारकर अधमरा कर रहे हैं!"

अड़ोस-पड़ोस वालों ने सोचा कि कोई चोर किसान को मार रहा है, सब चले आये, उस अंधेरे में किसान को ही चोर समझ कर उसके सिर पर लाठियाँ जमा दीं।

"बापरे मर गया!" इन शब्दों के साथ किसान ज़मीन पर गिरकर छटपटाने लगा।

"मर गया! मर जाओ, पिंड छूट जाएगा।" अपना सारा गुस्सा उतारते बछड़ा चिल्ला उठा।

आखिर लोगों को असली बात मालूम हो गयी, उन लोगों ने किसान के घावों पर मरहम-पट्टी की।

जब किसान थोड़ा चंगा हो गया, तब वह फिर हिमालयों की ओर दौड़ पड़ा।

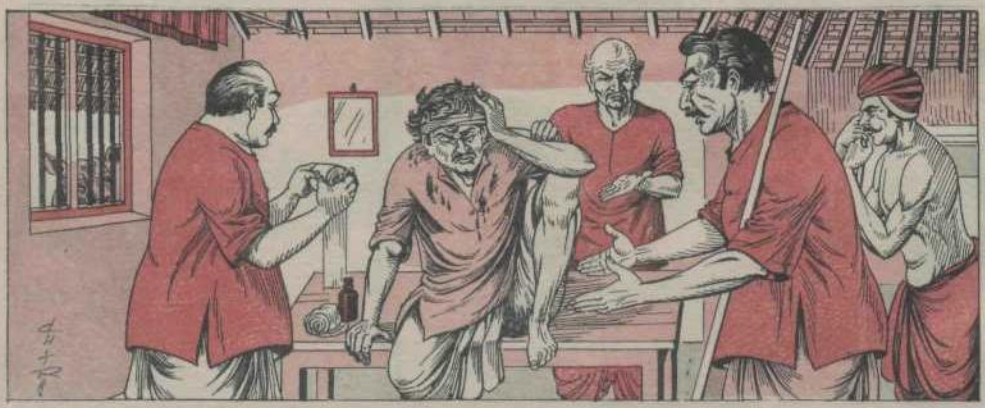

महाभारत

युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के बाद श्रीकृष्ण बहुत समय तक हस्तिनापुर में उनके अतिथि बन कर रहें। तब उन्हें अपने पिता वसुदेव को देखने की इच्छा हुई। इस पर वे सात्यकी तथा सुभद्रा को साथ ले द्वारका को लौट आये।

वसुदेव ने कृष्ण के द्वारा युद्ध के सारे समाचार जान लिये और अपने पोते अभिमन्यु की मृत्यु पर अपना दुख प्रकट किया।

इस बीच युधिष्ठिर ने अश्वमेध के लिए आवश्यक धन को हिमालयों से लाने का संकल्प किया। पाँडवों ने सेनाओं को इकट्ठा किया। तब पांडव धृतराष्ट्र, कुंती तथा गाँधारी से अनुमति लेकर हिमालयों की ओर चल पड़े। वे नदी, जंगल और पर्वतों को पार कर हिमालयों में पहुँचे। उस जगह पड़ाव डाला जहाँ पर मरुत्त ने अपना धन छोड़ रखा था। वे एक रात भर उपवास और जागरण करते दाभ की चटाइयों पर बैठे रहें, दूसरे दिन शिवजी, कुबेर तथा मणिभद्र की अर्चनाएँ कीं, भूतों के लिए बलियाँ देकर निधि को खोद डाला। उसमें अनेक प्रकार के सोने से निर्मित लोटे, थालियाँ, कलश, ढक्कन और थाल भी थे। सब सोने के बने थे। उन्हें ले जाने के लिए असंख्य ऊँट, घोड़े, वाहन और मनुष्यों की ज़रूरत पड़ी। आखिर सारा धन लेकर पांडव लोग हस्तिनापुर को लौट आये।

अश्वमेध यज्ञ की तैयारियों का समाचार जानकर कृष्ण प्रद्युम्न, सात्यकी इत्यादि को साथ ले हस्तिनापुर को चल पड़े। उनके साथ सांब, चारुधेष्ण, गद, कृतवर्मा, सुभद्रा और बलराम भी चल पड़े। धृतराष्ट्र ने विदुर के साथ आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। इस बार कृष्ण युयुत्स के घर ठहर गये।

उसी समय उत्तरा ने एक शिशु का जन्म दिया। मगर वह शिशु रोया नहीं, शव जैसा पड़ा हुआ था। इस वजह से सबकी खुशी ठण्डी हो गई। इस पर कृष्ण को बुला लाने के लिए कुंती चल पड़ी, तभी सात्यकी के साथ कृष्ण ही वहाँ पर आ पहुँचे। कृष्ण को देखते ही वहाँ पर उपस्थित सुभद्रा, द्रौपदी वगैरह नारियाँ रोने लगीं।

कुंती देवी कृष्ण को देख गद्‌गद कंठ में बोली–"हे कृष्ण, अब तुम्हें इस शिशु को बचाना होगा। अश्वत्थामा ने जिस अस्त्र का प्रयोग किया था, उसके कारण तुम्हारे भानजे का लड़का मृत पैदा हो गया है; इसको बचाने की कृपा करो।"

इसी प्रकार सुभद्रा, उत्तरा और द्रौपदी ने भी कृष्ण से अनेक प्रकार से निवेदन किया। उत्तरा पागल की तरह बनकर बेहोश हो गई।

कृष्ण ने अपने पाद से मृत शिशु के शरीर का स्पर्श कराया। तब उस शिशु में चेतना आ गई। तुरंत सब प्रसन्न हो उठे। ब्राह्मणों ने शिशु को आशीर्वाद दिया। पाडव वंश के परिक्षीण होने से वह शिशु ज़िंदा हो गया, इसलिए उसका नामकरण कृष्ण ने परीक्षित किया। वह शिशु दिन-प्रति दिन बढ़ता गया।

परीक्षित एक महीने का हो गया। तब तक पांडव हिमालयों से धन के साथ हस्तिनापुर लौट आये। उनके आगमन का समाचार मिलते ही हस्तिनापुर को सुंदर ढग से सजाया गया। यादव सब

पांडवों का स्वागत करने चल पड़े। सर्वत्र नृत्य-गान होने लगे। इस कोलाहल के बीच पांडवों ने हस्तिनापुर में प्रवेश किया। जब उन लोगों ने सुना कि उनका एक पोता हो गया है और मृत पैदा हुए उस शिशु को कृष्ण ने बचाया है, तब वे बहुत प्रसन्न हुए। सब ने मुक्त कंठ से कृष्ण का अभिनंदन किया।

इसके उपरांत युधिष्ठिर ने व्यास और कृष्ण की अनुमति पाकर अश्वमेध यज्ञ करने का उपक्रम किया। चैत्र पूर्णिमा के दिन युधिष्ठिर ने यज्ञ की दीक्षा ली। यज्ञ के अश्व का चुनाव सूत और ब्राह्मणों को मिलकर करना था। तब उसे सभी देशों में भेजना था और उसे सारे संसार में घूम कर लौटना था। यही यज्ञ का विधान था।

अश्वमेध यज्ञ के समय युधिष्ठिर दीक्षा में होते हैं; इस कारण यह निर्णय हुआ कि भीम नकुल की सहायता से राज-काज देखेगा, अर्जुन के द्वारा यज्ञाश्व के पीछे चलकर उसकी रक्षा करने तथा पारिवारिक उत्तर दायित्व का भार संभालने के लिए सहदेव नियुक्त हुए।

अश्व रक्षक के रूप में जाने वाले अर्जुन से युधिष्ठिर ने कहा–"हे अर्जुन, यज्ञाश्व के पीछे चलते उसकी रक्षा करते जाते समय यदि कोई क्षत्रिय तुम्हारा सामना करेगा तो तुम उनके साथ शत्रुता

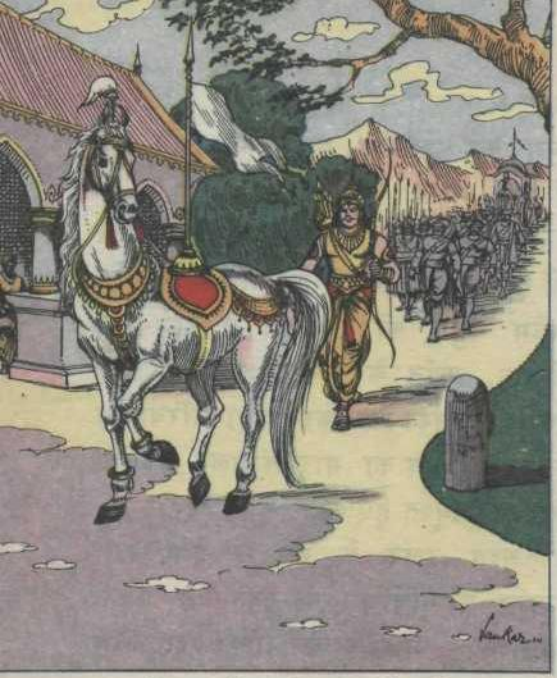

मत पैदा करो, बल्कि उन्हें भी यज्ञ में भाग लेने के लिए निमंत्रण दो।"

युधिष्ठिर ने यज्ञ की दीक्षा लेकर यज्ञ के अश्व को स्वयं छोड़ दिया, उसके पीछे गांडीव धारण कर अर्जुन चल पड़ा। तब नगर के सारे नागरिक एकत्रित हो बहुत ही प्रसन्न हुए। अर्जुन के साथ अश्वपोषण जाननेवाला यज्ञवल्क्य के एक शिष्य, वेदों के ज्ञाता कतिपय ब्राह्मण, तथा कुछ क्षत्रिय भी चल पड़े। युद्ध में पांडवों ने जो भूमि जीत ली थी, उस में अश्व ने पूरा संचार किया।

यों तो युधिष्ठिर ने बताया था कि किसी के साथ युद्ध न करो, फिर भी अर्जुन को अपने मार्ग में अनेक लोगों के साथ युद्ध करना पड़ा। कई जगह किरात तथा यवनों ने उसका सामना किया। अनेक आर्य क्षत्रियों ने भी अर्जुन का सामना किया, फिर भी सभी युद्धों में अर्जुन ही विजयी हुए।

महाभारत युद्ध में त्रिगर्तकों को अर्जुन ने मार डाला था, इसलिए अर्जुन को यज्ञाश्व के पीछे आने का समाचार जानकर त्रिगर्तों के पुत्र तथा पोते यज्ञ के अश्व को पकड़ने आये। अर्जुन ने इनके साथ स्नेह पूर्वक बातें करनी चाहीं, पर उन लोगों ने अर्जुन पर बाणों की वर्षा की। इस पर अर्जुन को त्रिगर्तों के नेता सूर्यवर्मा के साथ युद्ध करना पड़ा। तब अर्जुन ने सूर्यवर्मा, केतु धर्म, धृतवर्मा तथा अन्य अट्ठारह त्रिगर्त योद्धाओं को मार डाला, तब जाकर बाक़ी लोग उसके अधीन हो गये।

इसी प्रकार प्रागज्योतिषपुर में भग दत्त के पुत्र वज्रदत्त ने अर्जुन के साथ युद्ध किया। अर्जुन ने उसे पराजित किया, किंतु उसका वध किये बिना उसको मुक्त करते हुए अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने का उसे निमंत्रण दिया।

इसके बाद सैंधवों के साथ अर्जुन ने युद्ध किया। अर्जुन ने सभी सैंधवों को हराया। महाभारत युद्ध में अर्जुन के हाथ

सैंधव मर गया था। उसकी पत्नी दुश्शला धृतराष्ट्र की पुत्री थी। दुश्शला का पुत्र सुरथ अर्जुन को अश्वमेध यज्ञ के अश्व के साथ आने का सामाचार सुनकर अपने प्राण त्याग बैठा।

इस पर दुश्शला अपने पोते को एक रथ में बिठा कर अर्जुन के पास ले आई और बोली–"यह भी तुम्हारे पोते परीक्षित जैसा है। इसको देखते हुए तुम इन सारे सैंधवों को क्षमा करो। इसके दादा ने तुम्हारे साथ बड़ा द्रोह किया है; इस बात का हमें अत्यंत दुख है, इसलिए उस बात को तुम भूल जाओ।"

ये बातें सुन अर्जुन ने अपनी बहन दुश्शला के साथ आलिंगन किया और उसे तथा उसके पोते को घर भिजवा कर वह अपने घोड़े के साथ आगे बढ़ा।

कई दिन बाद यज्ञ का घोड़ा मणिपुर में पहुँचा। उस वक़्त बभ्रुवाहन मणिपुर पर शासन करता था। वह अर्जुन तथा चित्रांगदा का पुत्र था। जब उसने सुना कि उसका पिता उसके देश में आया हुआ है, तब वह कुछ ब्रह्मणों को साथ ले अर्जुन को देखने आया।

अर्जुन को अपने पुत्र का यह व्यवहार देख बड़ा क्रोध आया। वह बोला–"क्या तुम क्षत्रिय नहीं हो? मैं यहाँ अतिथि

बनकर नहीं आया हूँ। अस्त्र धारण कर यज्ञाश्व की रक्षा करने आया हूँ। यदि तुम वीर हो तो अश्व को पकड़कर मेरे साथ युद्ध करो, ऐसा न होकर क्या तुम मीठी बातें करने आये हो? क्या तुम्हें लज्जा नहीं होती?"

उस वक़्त उलूची वहाँ पर आई और अपने पुत्र बभ्रुवाहन से बोली–"बेटा, मैं एक नागवंश की नारी हूँ। तुम्हारी माता हूँ। तुम्हारे पिता युद्ध के मद में हैं। तुम युद्ध करके उन को प्रसन्न करो।"

इस पर बभ्रुवाहन का पौरुष जाग उठा। युद्ध की पोशाक पहनकर रथ पर सवार हो अर्जुन के साथ युद्ध करने आया। दोनों

के बीच भयंकर युद्ध हुआ और उस युद्ध में दोनों बेहोश हो गये। चित्रांगदा ने आकर देखा कि उसका पति व पुत्र दोनों बेहोश हो गिर पड़े हैं। इसलिए वह रोने लगी। पर थोड़ी देर बाद बभ्रुवाहन होश में आया, अर्जुन के वास्ते रोनेवाली अपनी माता को देख उसने अपनी करनी पर पश्चात्ताप प्रकट किया और अनशन व्रत किया।

उस वक़्त उलूची ने उसके निकट पहुँचकर कहा–"पगले, क्या तुम यह सोचते हो कि तुम्हारे पिता तुम्हारे हाथों में मर गये हैं? उनको कोई जीत नहीं सकता। मैंने अपनी माया के द्वारा तुम्हारे मन में ऐसा भ्रम पैदा किया है। इस मणि को ले जाकर उनका स्पर्श करा दो, वे तुरंत उठ खड़े हो जायेंगे।" तब बभ्रुवाहन ने ऐसा ही किया, अर्जुन मणि के स्पर्श के होते ही इस तरह उठ बैठा, मानो वह नींद से जाग उठा हो।

अर्जुन ने बभ्रुवाहन के साथ आलिंगन किया और वहीं पर उलूची तथा चित्रांगदा को देख वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उन दोनों से पूछा–"तुम दोनों युद्ध क्षेत्र में क्यों आ गई हैं?"

इसके उत्तर में उलूची ने कहा–"अर्जुन, आपने भीष्म को अन्यायपूर्वक मार डाला जिससे आप पाप के भागी हो गये हैं। उसका परिहार करने के निमित्त मैंने आप को आप के पुत्र के हाथों में मारवा डाला।"

ये बातें सुन अर्जुन बहुत प्रसन्न हुआ, उसने बभ्रुवाहन को अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने का निमंत्रण दिया। बभ्रुवाहन ने अर्जुन से निवेदन किया कि वे एक रात को उसके घर अतिथि बन कर रहे, परंतु अर्जुन ने यह कहकर अस्वीकार किया कि उसे अपने घोड़े के साथ घूमना अनिवार्य है। अतः संभव नहीं है।

यज्ञ का घोड़ा समुद्र तट तक गया और वहाँ से लौट कर इंद्रप्रस्थ को आने लगा। वह अनेक देश घूमते आखिर मगध की

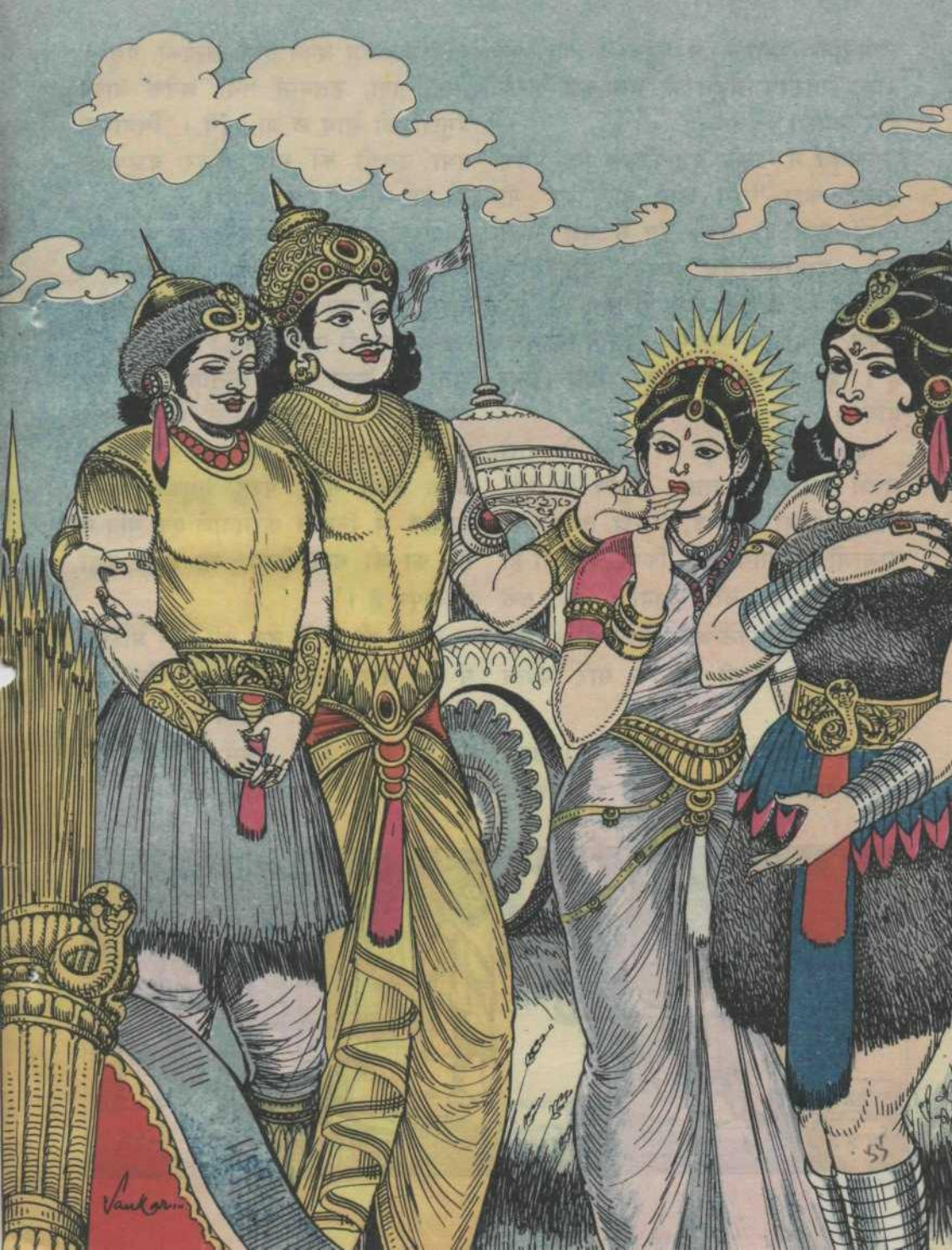

राजधानी राजगृह में पहुँचा। वहाँ का राजा मेघसंधि अर्जुन के साथ युद्ध करके हार गया।

अर्जुन ने उसके युद्ध-कौशल पर प्रसन्न होकर कहा–"तुम छोटे हो, फिर भी तुमने बहुत ही अच्छे ढंग से युद्ध किया है। तुम्हारा वध करना मुझे पसंद नहीं है। अगली चैत्र पूर्णिमा को मेरे अग्रज युधिष्ठिर अश्वमेध यज्ञ करने वाले हैं। तुमको उसमें अवश्य भाग लेना होगा।"

इस प्रकार अर्जुन ने घोड़े के पीछे चलते म्लेच्छ, निषाध, शकुनि के पुत्र, गांधार राजा, द्राविड़, आन्ध्र तथा ओढ्र राजाओं के साथ युद्ध किया, विजयी हो हस्तिनापुर को लौट आया। तब तक चैत्र पूर्णिमा निकट आने वाली थी। एक महीना पूर्व से ही यज्ञ के सारे प्रयत्न प्रारंभ हुए।

यज्ञ के समय असंख्य लोग आये। उनमें अनेक वेदविद तथा राजा भी थे। कृष्ण और बलराम अपने साथ सात्यकी, प्रद्युम्न, सांब, गदा, कृतवर्मा तथा अनेक यादव प्रमुखों को साथ ले आ पहुँचे। चित्रांगदा तथा उलूची को साथ लेकर बभ्रुवाहन भी यज्ञ में भाग लेने आया।

अश्वमेध यज्ञ नियत समय पर बड़े वैभव के साथ संपन्न हुआ। युधिष्ठिर ने यज्ञ में आये हुए सभी लोगों में दान बाँटे। सब ने यज्ञ की प्रशंसा की। युधिष्ठिर के दानों की मुक्त कंठ से प्रस्तुति की। उस वक़्त वहाँ पर एक नेवला आया और बोला–"आप लोग इस यज्ञ की प्रशंसा करके थकते नहीं, परंतु मधुकरी करते कुरुक्षेत्र में निवास करनेवाले एक मुनि ने सत्तू का जो दान किया, वह इससे कहीं महत्वपूर्ण है।"

नेवले की बातें सुन सब लोग आश्चर्य में आये और उससे पूछा–"तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? शास्त्र-विधि से यह यज्ञ जो संपन्न हुआ, इसमें कौन सी त्रुटि है? तुम सच सच बताओ?"

मित्र-भेद

[११]

राजकुमारी के पूछने पर विष्णुरूप में स्थित जुलाहे ने कहा—"मैं तुम्हारे वास्ते ही आया हूँ, मेरे साथ आलिंगन करो।"

"भगवन, आप तो देवता हैं! मैं मानवी हूँ। हमारे बीच यह संबंध कैसा?" सुदर्शना ने कहा।

"प्रिये, तुम मेरी अर्धांगी लक्ष्मी हो! क्या तुम्हें स्मरण नहीं है? शापवश तुमने मानवी का जन्म धारण किया, इस तरह हमारे बीच थोड़े समय के लिए वियोग प्राप्त हुआ। मैं मानव के रूप में थोड़े दिनों के लिए तुम्हारे पति के रूप में रहूँगा, तब हम शाप से मुक्त हो जायेंगे। मैं तुम्हें मानव पति से बचाने आया हूँ। इसलिए हम गांधर्व-विधि से विवाह करेंगे।" जुलाहे ने कहा।

राजकुमारी उसकी बातें सुन परमानंदित हुई और उसने जुलाहे की पत्नी बनने के लिए मान लिया।

इस तरह उनके दिन आराम से बीतने लगे। अर्ध रात्रि के समय जुलाहा अपने गरुड़वाहन पर राजकुमारी के पास आता, सवेरे होने के पहले वह लौट जाता था। लौटते वक़्त वह राजकुमारी से बता देता कि वह वैकुण्ठ में जा रहा है, फिर रात को लौट आयेगा।

थोड़े दिन बीतने पर राजकुमारी की सहेलियों ने इस बात का पता लगाया कि राजकुमारी के पास रात के वक्त कोई पुरुष आता-जाता है। यदि राजा को इसकी सूचना न दे तो वे दण्ड देंगे, इसलिए सबने राजा के चरणों पर गिरकर

कहा–"महाराज, हमें अभय प्रदान कीजिए। हमें आप से कुछ निवेदन करना है।"

"अच्छी बात है! डरो मत! बताओ, क्या बात है?" राजा ने कहा।

"महाराज, हम हज़ारों आँखों से राजकुमारी पर निगरानी रख रही हैं, फिर भी राजकुमारी के पास कोई पुरुष रात के वक़्त आता-जाता है। हम नहीं जान पाती हैं कि वह कैसे आता-जाता है! इतना निश्चित है कि वह सीढ़ियाँ पारकर राजकुमारी के पास नहीं जाता। ऐसा करता तो हमें पता लग जाता, वह न द्वार से होकर ही जाता है, क्योंकि वहाँ पर कई पहरेदार बैठे हैं। हम रात के दस बजे तक राजकुमारी के साथ रहती हैं और उनके सो जाने पर ही लौट आती हैं। हम फिर सुबह पांच बजे के क़रीब राजकुमारी के पास जाती हैं। इस बीच हम राजकुमारी के बुलाने पर ही उनके कमरे में जाती हैं। जो पुरुष राजकुमारी के कमरे में आता है, वह इसी बीच आता होगा। हमारी समझ में नहीं आता है कि वह कैसे आता है और कैसे जाता है? फिर आप जो उचित समझें, करें!" राजकुमारी की सहेलियों ने कहा।

यह बात सुनने पर राजा चिंता में पड़ गया। बड़े वंश में जन्म लेकर भी राजकुमारी ने गलत रास्ते पर क़दम बढ़ाया है। पर इसमें उसकी कोई असावधानी नहीं हुई है। कन्याओं को जन्म देनेवाले माता-पिताओं का बुरा हाल ऐसा ही होता है! यों सोचते राजा रानी के पास गया, सारी बातें सुनाकर बोला–"वह कोई दुष्ट होगा, लगता है कि उसकी आयु समाप्त होने को है, इसलिए वह ऐसा करता है।"

रानी सर पीटते राजकुमारी के कमरे में गई और डांट बैठी–"हमारे वंश को डुबाने के लिए तुम पैदा हो गयी हो। क्या तुमने अपने शील को नष्ट कर दिया है? 'तुम्हारे पास रात के वक़्त आनेवाला वह अल्पायु' कौन है?"

राजकुमारी ने लज्जा से सिर झुका लिया, जमीन की ओर देखते अपनी माता को बताया कि नारायण गरुड़वाहन पर उसके वास्ते कैसे आता-जाता है!

यह अद्‌भुत गाथा सुनकर रानी को अपार आनंद हुआ। उसका शरीर पुलकित हो उठा। वह तुरंत अपने पति के पास दौड़ गयी और बोली–"महाराज, आप धन्य हैं! हमारे कुलदेवता नारायण हर रात को बेटी के पास आते-जाते हैं। सुनते हैं कि हमारी कन्या लक्ष्मी का अवतार है! उन दोनों के बीच गांधर्व विधि से विवाह भी हो गया है। आज रात को हम खिड़की में से नारायण के दर्शन करेंगे। यह बात सही है कि वे भगवान हम जैसे मानवों से बात नहीं करते!"

यह समाचार सुनने पर राजा को भी बड़ा आनंद हुआ। उसने दिन का समय बड़ी मुश्किल से बिताया। रात हो गई। राजा और रानी खिड़की के पास पहुँचकर बड़ी आतुरता के साथ आकाश की ओर देखने लगे। तब शंख, चक्र, गदा व पद्मधारी जुलाहे को गरुड़वाहन पर आते उन लोगों ने देख लिया। प्रसन्न हो राजा ने रानी से कहा–"इस संसार में हम से बढ़कर कोई धन्य व्यक्ति नहीं हैं। हमने साक्षात् लक्ष्मी का ही जन्म दिया है। भगवान नारायण

हमारे दामाद हो गये हैं! मैं अपने दामाद के प्रताप से सारा संसार जीत लूंगा।"

इस घटना के थोड़े दिन बाद सम्राट विक्रमसेन के दूत राजा सुप्रतिवर्मा के यहाँ से शुल्क ले जाने आ पहुँचे। सुप्रतिवर्मा ने सम्राट के दूतों का आदर-सत्कार नहीं किया। इस पर उन दूतों ने क्रोधित हो कहा–"राजन, शुल्क अदा करने का समय बीत गया है, फिर भी आपने शुल्क जमा नहीं किया। आप नहीं जानते कि सम्राट विक्रमसेन का क्रोध दावानल जैसा है! आप सोचते हैं कि कोई देवता आपकी रक्षा करेंगे।"

राजा सुप्रतिवर्मा ने उनकी धमकी की परवाह नहीं की। वे सम्राट के यहाँ लौट

गये और तिल का पहाड़ बनाकर शिकायतें कीं। इस पर सम्राट विक्रमसेन ने अपने सभी सामंतों को बुला भेजा, एक भारी सेना को लेकर सुप्रतिवर्मा के देश पर आक्रमण किया। उसने जनता को सताना शुरू किया, इसलिए पीड़ित प्रजा पुंड्रवर्द्धनपुर में आई; राजमहल के सामने अपनी दुरवस्था की कहानी सुनाई। फिर भी राजा सुप्रतिवर्मा विचलित न हुआ।

शीघ्र ही विक्रमसेन ने पुंड्रवर्द्धनपुर के निकट आकर नगर को घेर लिया। इस पर मंत्री, पुरोहित, नगर प्रमुख इत्यादि ने राजा के पास पहुँचकर निवेदन किया कि विलंब करना ठीक नहीं है।

राजा ने मुस्कुराकर कहा–"आप लोग चिंता न कीजिए। शत्रु का निर्मूल करने का उपाय मैं जानता हूँ। कल सुबह आप ही लोग देखेंगे कि मैं क्या करने वाला हूँ!"

इसके बाद राजा ने अपनी पुत्री सुदर्शना को बुला भेजा और मीठे शब्दों में कहा–"बेटी, मैंने तुम्हारे पति के पराक्रम का आसरा लेकर अपने शत्रु से युद्ध मोल लिया है। इसलिए आज जब वे तुम्हारे पास आयेंगे, तब उन्हें समझा दो कि सवेरे तक शत्रुओं का नाश हो जाय!"

जुलाहा जब रात को राजकुमारी के पास आया, तब राजकुमारी ने उससे सारी बातें बताईं। इस पर उसने मंदहास करते हुए कहा–"प्रिये! हिरण्यकश्यप, कंस, मधुकैटभ इत्याहि का वध करनेवाले मेरे लिए मनुष्य मात्र का वध करना कौन बड़ी बात है? तुम अपने पिता से कह दो कि मैं अपने चक्रायुध के द्वारा शत्रु का निर्मूल कर बैठूँगा।"

सुदर्शना ने यह बात गर्व के साथ बताई। वह बड़ा प्रसन्न हुआ, राजा ने नगर में ढिंढोरा पिटवाया कि दूसरे दिन सवेरे तक राजा विक्रमसेन मार डाला जाएगा, इसलिए उसकी संपत्ति जिस किसी के भी हाथ लगे, वे स्वयं रख सकते हैं। जनता यह ढिंढोरा सुनकर खुश हो गई।

१४९. कोलोन केथीड्रल

सेंट पीटर के लिए समर्पित यह केथीड्रल जर्मन के कोलोन नगर में है। गोथिक शिल्प के उत्तम उदाहरण के रूप में विश्व में इसकी बड़ी ख्याति है। इसकी नींव सन् १२४८ में डाली गई, परंतु इसका निर्माण १८८० में पूरा हुआ। इसके जुड़वें शिखरों की ऊंचाई ५०० फुट से अधिक है।

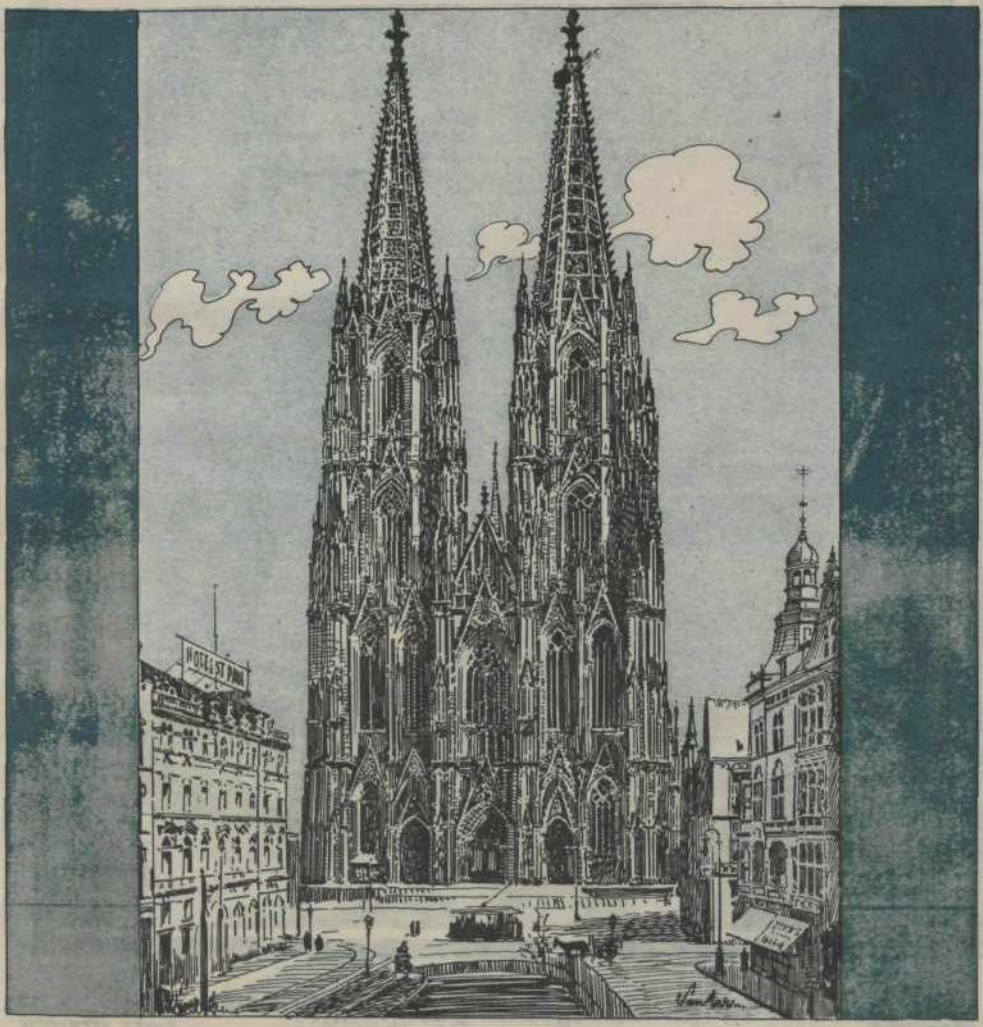

Photo by Sambhu Mukherjee

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

संगीत की महफिल जुड़ी है यहाँ!

प्रेषक :
निर्झर श्रीवास्तव

Photo by Bishan Maheshwari

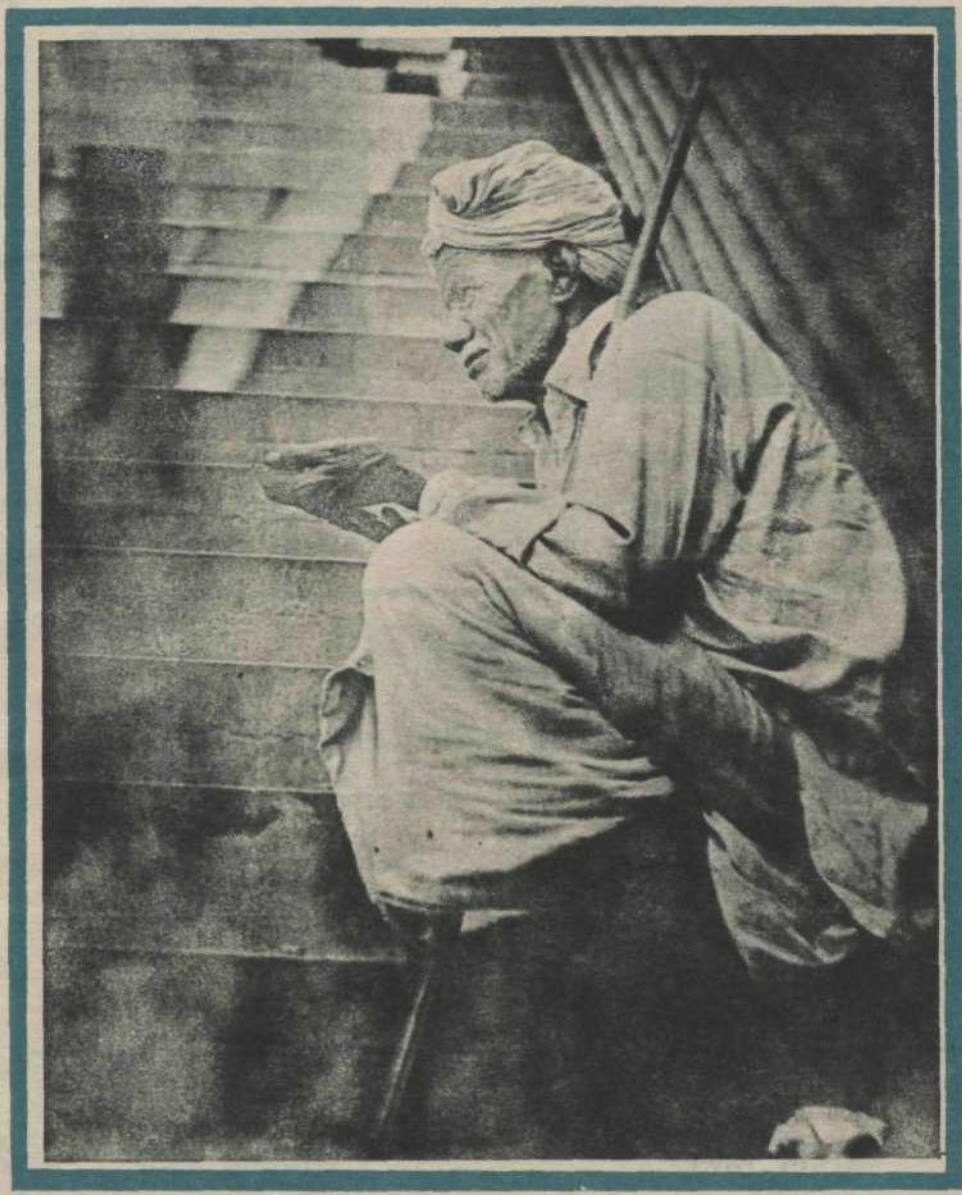

राजोद पो.
जि. धार (म. प्र.)

ढल गई है उम्र, जाएँ कहाँ?

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

* परिचयोक्तियाँ जून ५ तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ कार्ड पर ही लिख भेजें।
* परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अगस्त के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

अमर वाणी	...	८	तावीज़ की महिमा	...	३३
यक्ष पर्वत	...	९	जादू का दूधवाला	...	३९
श्रम का मूल्य	...	१७	बोलनेवाला बछड़ा	...	४६
बेमतलब की बातें	...	२२	महाभारत	...	४९
ऋण-मुक्ति	...	२८	मित्र-भेद	...	५७

दूसरा आवरण पृष्ठ:
प्राचीन शिल्प

तीसरा आवरण पृष्ठ:
आधुनिक शिल्प

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3. Arcot Road, Madras-600026. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

Photo by: CHANDRAKANT KHATA

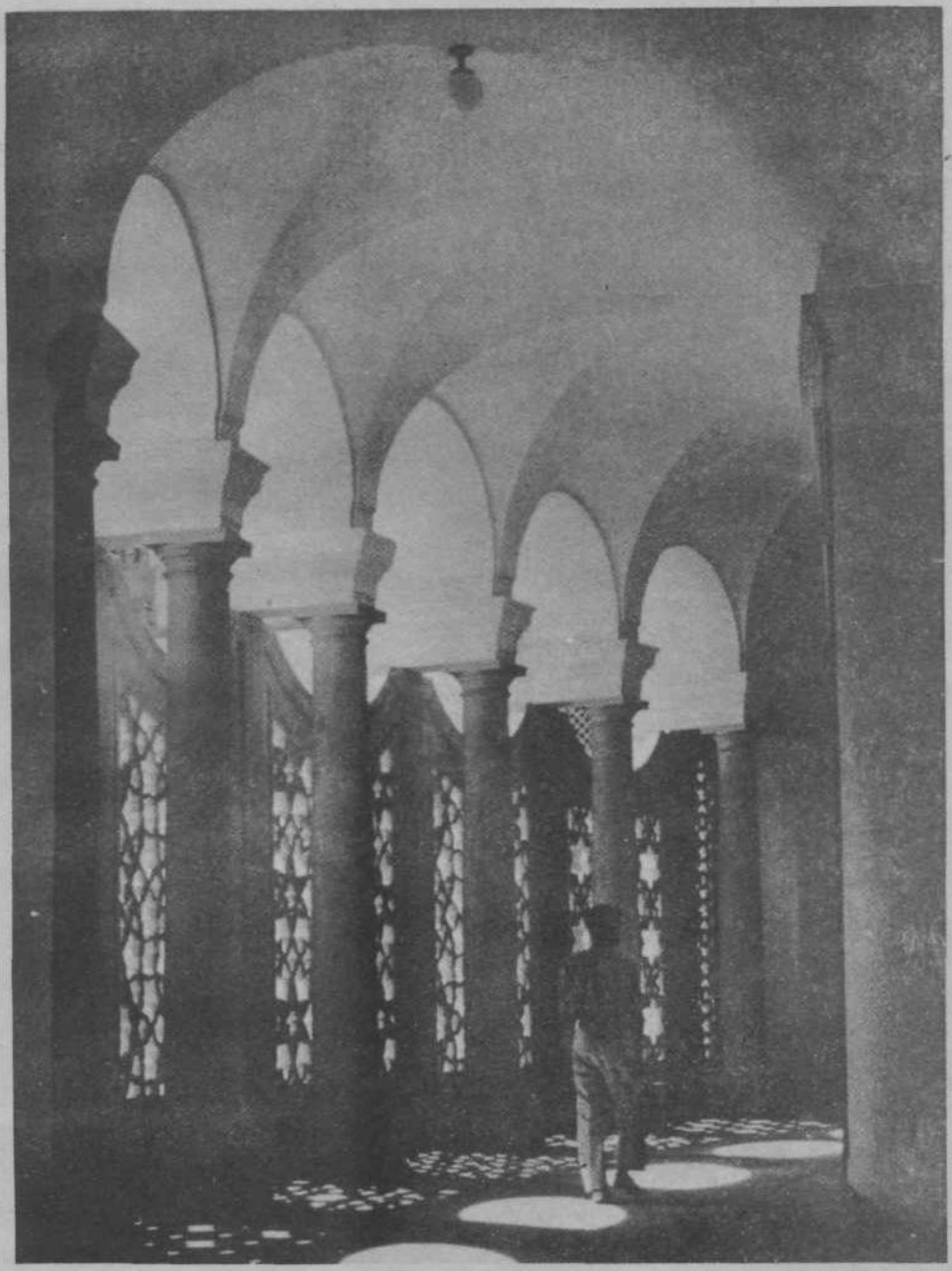

MODERN STRUCTURE

मित्र-भेद